गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 198
दि. 19.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

बांग्लादेश में हसीना को मौत की सजा के बाद फैल गई हिंसा, राजधानी और कई जिलों में तनाव का माहौल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बांग्लादेश में देश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को मानवता के विरुद्ध अपराधों के मामले में मौत की सजा सुनाए जाने के बाद पूरे देश में उग्र विरोध और हिंसा का माहौल बन गया। रविवार देर रात से सोमवार तक कम से कम पांच जिलों में प्रदर्शनकारियों ने सड़कों पर आगजनी की, वाहनों को जलाया और कई सरकारी भवनों पर हमला किया। हिंसा में दर्जनों लोग घायल हुए और संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचा।

अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण (आईसीटी) ने पिछले वर्ष जुलाई में देश में हुए छात्र आंदोलन और विरोध प्रदर्शनों के दौरान हुए हिंसक घटनाक्रम से जुड़े मामलों में हसीना को दोषी ठहराते हुए मृत्युदंड सुनाया। अदालत ने उनके सहयोगियों—पूर्व गृहमंत्री असदुज्जमां खान कमाल और पूर्व पुलिस महानिरीक्षक चौधरी अब्दुल्ला अल-मामून—को भी दोषी पाया। हालांकि मामून को क्षमादान मिला और उन्हें पांच वर्ष की सजा दी गई, लेकिन हसीना और असदुज्जमां को मृत्युदंड के साथ उनकी संपत्ति जब्त करने का आदेश भी जारी किया गया।

राजधानी ढाका में सबसे ज्यादा तनाव देखा गया। धानमंडी-32 इलाके में प्रदर्शनकारियों ने सड़कों पर मार्च निकाला और राजमार्गों को जाम कर

दिया। इसी क्षेत्र में शेख मुजीबुर रहमान का आवास स्थित है, जिससे आसपास के इलाके में सुरक्षा बलों और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुईं। पुलिस और सेना ने लाठीचार्ज, आंसू गैस और साउंड ग्रेनेड का इस्तेमाल कर भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश की। इन झड़पों में कम से कम 50 लोग घायल हुए, जिनमें पुलिसकर्मी और आम नागरिक शामिल थे।

हिंसक प्रदर्शनों का असर पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद अब्दुल हमीद के आवास तक भी पहुँचा। किशोरगंज जिले में उनके आवास पर प्रदर्शनकारियों ने हमला कर तोड़फोड़ की। इसके अलावा गोपालगंज के कोटालीपारा पुलिस स्टेशन और उपजिला परिषद कार्यालय पर भी प्रदर्शनकारियों ने देसी बम फेंके, जिससे तीन पुलिसकर्मी घायल हुए। घायलों में कांस्टेबल इरिन नाहर (31), आरिफ हुसैन (33) और नजरुल इस्लाम (52) शामिल हैं।

हसीना और असदुज्जमां की संपत्ति जब्त करने के आदेश के बाद न्यायालय परिसरों के आसपास सुरक्षा के अभूतपूर्व उपाय किए गए। आईसीटी-1 और उच्च न्यायालय के बाहर पुलिस, सेना और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) के जवान तैनात किए गए। उच्च न्यायालय परिसर के पास बख्तरबंद वाहनों की तैनाती की गई और सुरक्षा को कड़ा किया गया। न्यायाधिकरण ने यह भी निर्देश दिया कि झुलस गए और हिंसा में मारे गए लोगों के परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाए।

हसीना और असदुज्जमां खान की संपत्ति का विवरण भी सार्वजनिक किया गया। हलफनामों के अनुसार, हसीना के पास कुल 4.34 करोड़ टका की संपत्ति थी, जबकि असदुज्जमां खान की घोषित संपत्ति लगभग 10.25 करोड़ टका थी, जिसमें नकदी, बैंक जमा, बॉन्ड, शेयर, बचत प्रमाणपत्र और वाहन शामिल थे। रिपोर्टों के अनुसार, हसीना और असदुज्जमां फिलहाल भारत में शरण लिए हुए हैं।

देशभर में फैली हिंसा और तनाव के मद्देनजर सेना अलर्ट पर है। ढाका के कई हिस्सों में कर्फ्यू जैसे हालात बनाए गए और सुरक्षा बलों ने प्रमुख मार्गों पर पेट्रोलिंग बढ़ा दी। हिंसा की यह लहर न केवल राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा रही है, बल्कि नागरिकों और सरकारी अधिकारियों के लिए भी गंभीर चुनौती बन गई है।

इस घटना ने बांग्लादेश की राजनीति और सामाजिक सुरक्षा पर गहरा असर डाला है। हिंसा की प्रतिक्रिया में सरकार ने प्रदर्शनकारियों को नियंत्रित करने और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कड़ा रुख अपनाया है। देशवासियों के बीच डर और असुरक्षा की भावना गहरी हो गई है, और अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी बांग्लादेश की स्थिति पर गंभीर नजर रख रहा है।

ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों पर ईडी की बड़ी कार्रवाई, 11 परिसरों पर छापेमारी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने धनशोधन और वित्तीय अनियमितताओं के संदेह में ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म विनजो और गेम्ज़क्राफ्ट के खिलाफ मंगलवार को बड़े पैमाने पर छापेमारी की। सूत्रों के अनुसार, यह कार्रवाई कुल 11 परिसरों पर की गई, जिनमें बेंगलुरु के पांच, दिल्ली के चार और गुरुग्राम के दो परिसरों को शामिल किया गया। ईडी के बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालय की इस कार्रवाई का मकसद दोनों कंपनियों के वित्तीय लेन-देन और धनशोधन के संकेतों की जांच करना है। सूत्रों ने बताया कि छापेमारी केवल कंपनियों के कॉर्पोरेट कार्यालयों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनके प्रमुख अधिकारियों—सीईओ, सीओओ और सीएफओ के आवासों पर भी कार्रवाई की गई। इसके तहत कर्मचारियों से दस्तावेज और डिजिटल रिकॉर्ड जब्त किए गए। पीड़ितों द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी में आरोप लगाया गया है कि इन गेमिंग कंपनियों ने अपने ऐप्स और वेबसाइटों के एल्गोरिद्म में हेरफेर किया, जिससे गेमर्स को वित्तीय नुकसान उठाना पड़ा।

जांच एजेंसी का संदेह है कि प्रमोटरों के पास क्रिप्टो वॉलेट थे और क्रिप्टोकरेंसी के

माध्यम से धनशोधन किया गया हो सकता है। प्रारंभिक जांच में यह संकेत मिला है कि ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के जरिये खेलों में विजेता और हार के परिणामों को नियंत्रित किया गया, जिससे नियमित गेमर्स को नुकसान हुआ और कंपनियों के प्रमोटरों के लिए अवैध वित्तीय लाभ सुनिश्चित हुआ।

ईडी ने बताया कि यह कार्रवाई उच्च स्तरीय वित्तीय जांच का हिस्सा है, जिसके तहत कंपनियों के बैंकिंग ट्रांजेक्शन, डिजिटल वॉलेट और अन्य वित्तीय स्रोतों का विश्लेषण किया जाएगा। एजेंसी की टीम ने कहा कि ऑनलाइन गेमिंग की दुनिया में तेजी से बढ़ते लेन-देन और वर्चुअल मुद्रा के इस्तेमाल के कारण वित्तीय धोखाधड़ी की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है। इस कार्रवाई का उद्देश्य न केवल दोषियों का पता लगाना है, बल्कि अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को भी चेतावनी देना है कि नियमों और वित्तीय पारदर्शिता का पालन अनिवार्य है। कंपनियों के प्रवक्ता और आधिकारिक प्रतिनिधि से ईडी की कार्रवाई पर तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं मिल सकी। हालांकि, सूत्रों ने कहा कि ईडी को शुरुआती जांच में कई महत्वपूर्ण डिजिटल सबूत मिले हैं, जिनके आधार पर अगली कार्रवाई की जाएगी। इन सबूतों में गेमिंग ऐप्स के लॉग्स, ट्रांजेक्शन रिकॉर्ड और क्रिप्टो वॉलेट से जुड़े वित्तीय दस्तावेज शामिल हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार, यह कार्रवाई ऑनलाइन गेमिंग सेक्टर में पहली बार इतनी व्यापक पैमाने पर की गई है, और इसका प्रभाव अन्य प्लेटफॉर्म पर भी पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यदि कंपनियों के खिलाफ आरोप साबित होते हैं, तो इससे न केवल वित्तीय जुर्माने और सख्त कानूनी कार्रवाई हो सकती है, बल्कि गेमिंग इंडस्ट्री के लिए भी निगरानी और नियमन को और मजबूत किया जाएगा। ईडी की यह कार्रवाई गेमिंग सेक्टर में पारदर्शिता, सुरक्षा और उपयोगकर्ताओं के हितों की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। जांच आगे बढ़ते ही स्पष्ट होगा कि इन प्लेटफॉर्म पर वास्तविक में कितनी अनियमितताएं हुई हैं और प्रमोटरों ने किन तरीकों से नियमों का उल्लंघन किया।

कुख्यात माओवादी कमांडर हिडमा और उसकी पत्नी का एनकाउंटर: आंध्र-ओडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा पर बड़ी सफलता

(जीएनएस)। राजमुंद्री/मारेडुमिली। आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू जिले के मारेडुमिली स्थित घने वन क्षेत्र में मंगलवार सुबह सुरक्षा बलों ने एक व्यापक और सफल कार्रवाई को अंजाम दिया है। इस मुठभेड़ में, सुरक्षा बलों ने मोस्ट वांटेड माओवादी कमांडर माडवी हिडमा और उसकी पत्नी राजक्का सहित कुल छह नक्सलियों को ढेर कर दिया। नक्सल मोर्चे पर इसे सुरक्षा बलों की सबसे महत्वपूर्ण कामयाबियों में से एक माना जा रहा है, जिसने हिडमा के दो दशक लंबे नक्सली अध्याय का अंत कर दिया है।

करोड़ों का इनामी कमांडर हुआ ढेर

⏩ हिडमा पर सुरक्षा एजेंसियों द्वारा एक करोड़ रुपये का बड़ा इनाम घोषित था।

⏩ उसकी पत्नी राजक्का पर भी पचास लाख रुपये का इनाम घोषित था।

यह कार्रवाई तब शुरू हुई जब पुलिस महानिदेशक हरीश कुमार गुप्ता ने बताया कि आंध्र प्रदेश, ओडिशा और छत्तीसगढ़ की सीमाओं पर माओवादी गतिविधियों की सूचना मिली थी। इसके बाद तड़के से ही एक सघन तलाशी अभियान शुरू किया गया था। इसी दौरान, मारेडुमिली के जंगल में

छिपे माओवादियों ने सुरक्षा बलों पर अचानक फायरिंग शुरू कर दी। सुरक्षा बलों की जवाबी कार्रवाई में कुल छह नक्सली मारे गए।

मारे गए नक्सलियों की पहचान

मारे गए माओवादियों की पहचान निम्नलिखित के रूप में हुई है:

1.माडवी हिडमाः (मोस्ट वांटेड कमांडर)
2.राजक्काः (हिडमा की पत्नी)
3.मल्ला
4.देवे
5.चेल्लूरी नारायण उर्फ सुरेश
6.टेक शंकर

गौरतलब है कि राजक्का 2010 में सुकमा में हुई मुठभेड़ में भी शामिल रही थी, जिसमें 25 सीआरपीएफ जवान शहीद हुए थे।

26 बड़े हमलों का सूत्रधार और शीर्ष रणनीतिकार

हिडमा, जो छत्तीसगढ़ के सुकमा के पुरवती गांव में जन्मा था, कम उम्र में ही माओवादी केंद्रीय समिति तक पहुंच गया था और संगठन का शीर्ष रणनीतिकार माना जाता था।

⏩ गुरिल्ला युद्धनीति का माहिरः वह पीएलजीए (पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी) की बटालियन-1 का कमांडर था और दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का एक प्रमुख हिस्सा भी था।

⏩ प्रशिक्षणः रिपोर्ट्स के अनुसार, हिडमा ने फिलीपींस में जाकर गुरिल्ला युद्ध की ट्रेनिंग ली थी।

⏩ बड़ी वारदातों में भूमिकाः सुरक्षा एजेंसियों के मुताबिक, वह 26 बड़े नक्सली हमलों का मुख्य सूत्रधार था। इसमें दंतेवाड़ा (2010), झीरम घाटी (2013) और बुरकापाल (2017) जैसे बड़े हमले शामिल थे।

⏩ बहुभाषीः वह हिंदी, गोंडी, तेलुगु, कोया और बंगाली सहित कई भाषाओं का जानकार था।

2023 में हिडमा के मारे जाने की अफवाहें भी फैली थीं, लेकिन वह अपनी तीन-स्तरीय सुरक्षा घेरे के कारण पकड़ में नहीं आ सका था। मंगलवार की कार्रवाई ने उसके नक्सली हिंसा के लंबे कार्यकाल को समाप्त कर दिया।

गृह मंत्री ने दी बधाई

इस मुठभेड़ को नक्सलवाद के खिलाफ एक बड़ी निर्णायक जीत माना जा रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी इस महत्वपूर्ण सफलता पर संयुक्त बलों को बधाई दी है। विशेषज्ञों का कहना है कि हिडमा के खात्मे से नक्सली नेटवर्क को एक बड़ा झटका लगा है और इस क्षेत्र में नक्सलवाद के कमजोर पड़ने की उम्मीद बढ़ी है।

दिल्लीः कोर्ट और स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली में चार जिला अदालतों और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के दो स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद एहतियात के तौर पर संबंधित स्कूलों और अदालत परिसरों को खाली करा लिया गया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि एक अज्ञात व्यक्ति ने पुलिस कंट्रोल रूम को मंगलवार सुबह फोन कर दावा किया कि प्रशांत विहार और द्वारका स्थित सीआरपीएफ के स्कूलों में बम लगाए गए हैं। इसके बाद दोनों परिसरों को खाली करा लिया गया। उन्होंने बताया कि पटियाला हाउस कोर्ट, साकेत कोर्ट, रोहिणी कोर्ट और द्वारका कोर्ट को भी बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद अदालतों में कामकाज अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया है। बम की धमकी ई-मेल के जरिये मिली थी। सीआरपीएफ और बम निरोधक दस्ते मामले की जांच में जुड़े हैं। हालांकि जांच में अभी तक किसी भी अदालत में बम मिलने की खबर नहीं है। अग्निशमन विभाग के अनुसार आज सुबह करीब 9 बजे आए इस कॉल के बाद स्थानीय पुलिस, बम स्क्वॉड, डॉग स्क्वॉड, आपदा प्रबंधन, अग्निशमन विभाग सहित अन्य संबंधित एजेंसियों के साथ मिलकर घंटों जांच की गयी, लेकिन कुछ भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिला। पुलिस ने एहतियात के तौर पर दोनों स्कूलों को खाली कराया। पुलिस अधिकारी ने बताया कि धमकी देने के तुरंत बाद कॉलर का फोन बंद हो गया।

भारतीय अर्थव्यवस्था का सुनहरा दौर : $5 ट्रिलियन का लक्ष्य निर्धारित, 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी शक्ति बनने की ओर अग्रसर

(जीएनएस)। भारतीय अर्थव्यवस्था का सुनहरा दौरः $5 ट्रिलियन का लक्ष्य निर्धारित, 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी शक्ति बनने की ओर अग्रसर

नई दिल्ली। भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को एक नए और महत्वाकांक्षी पथ पर ले जाने का संकल्प लिया है, जिसका केंद्र बिंदु 2030 तक $5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य है। सरकारी और आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है कि मजबूत घरेलू मांग, डिजिटल क्रांति और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में बढ़ती भागीदारी के कारण भारत वर्तमान में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से तीसरी सबसे बड़ी शक्ति बनने की ओर तेजी से अग्रसर है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की यह तीव्र वृद्धि कई प्रमुख इंजनों द्वारा संचालित है। सरकार द्वारा शुरू की गई उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना ने विनिर्माण क्षेत्र को अभूतपूर्व बढ़ावा दिया है, जिससे घरेलू और विदेशी निवेश दोनों आकर्षित हुए हैं। यह योजना न केवल स्थानीय उत्पादन को बढ़ा रही है, बल्कि भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में एक प्रमुख वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित कर रही है।

इसके साथ ही, डिजिटल इंडिया मिशन ने वित्तीय समावेशन को बढ़ाया है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) जैसे नवाचारों ने लेनदेन को सरल बनाया है, जिससे औपचारिक अर्थव्यवस्था का आकार लगातार बढ़ रहा है। कृषि क्षेत्र में संरचनात्मक सुधार और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश—विशेषकर राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) के माध्यम से—समग्र आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

जब दुनिया की कई विकसित अर्थव्यवस्थाएं धीमी वृद्धि और उच्च मुद्रास्फीति से जूझ रही हैं, भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक जैसे वैश्विक संस्थान लगातार भारत की विकास दर के अनुमानों को ऊपर की ओर संशोधित कर रहे हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि चीन पर निर्भरता कम करने की वैश्विक प्रवृत्ति (China+1 strategy) का सीधा लाभ भारत को मिल रहा है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां (MNCs) अब भारत को अपने क्षेत्रीय या वैश्विक हब के रूप में देख रही हैं, जिससे रोजगार सृजन और निर्यात में वृद्धि हो रही है। G20 की सफल अध्यक्षता और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी ने वैश्विक आर्थिक निर्णय लेने में इसकी साख और प्रभाव को मजबूत किया है।

हालांकि विकास की राह उज्जवल है, लेकिन कुछ संरचनात्मक चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इनमें मुख्य रूप से कौशल विकास में अंतराल, भूमि और श्रम सुधारों को और गति देना, और ऊर्जा परिवर्तन (Energy Transition) में निवेश बढ़ाना शामिल है। मुद्रास्फीति पर नियंत्रण और एक स्थिर राजकोषीय नीति बनाए रखना भी इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

कुल मिलाकर, भारत एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़ा है जहां नीतिगत स्थिरता, तकनीकी नवाचार और युवा जनसांख्यिकी का मेल इसे अगले दशक में एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए तैयार है। यह लक्ष्य न केवल आर्थिक आंकड़े हासिल करने के

मदीना बस हादसा: 44 भारतीय श्रद्धालुओं की मौत, परिजनों के लिए राहत और सहायता के इंतजाम

(जीएनएस)। दुबई। सऊदी अरब में उमराह यात्रा पर निकले भारतीय श्रद्धालुओं की बस दुर्घटना ने भारत और खासकर तेलंगाना को शोक में डुबो दिया। रविवार देर रात हुए इस भीषण हादसे में 44 भारतीयों की मौत हो गई, जिनमें से 42 तेलंगाना के निवासी थे। हादसा तब हुआ जब बस एक ईंधन टैंकर से टकरा गई और उसके बाद आग तेजी से फैल गई। इस आगजनी में अधिकांश यात्री बाहर निकलने में असफल रहे और घटनास्थल पर ही जलकर मौत के मुंह में चले गए। इस दुर्घटना में केवल एक यात्री, अब्दुल शोएब मोहम्मद, खिड़की के पास की सीट पर होने के कारण समय रहते बस से बाहर कूदने में सफल रहे और वह फिलहाल मदीना के अस्पताल में उपचाराधीन हैं। भारतीय महावाणिज्य दूत फहद अहमद खान सूरी ने अस्पताल जाकर उनसे मुलाकात की और हर संभव सहायता का भरोसा दिया।

हादसे के तुरंत बाद भारत सरकार और सऊदी अरब में भारतीय दूतावास ने पीड़ित परिवारों की मदद के लिए विशेष कदम उठाए। मदीना में अस्थायी कैंप कार्यालय स्थापित किया गया है, जो पीड़ितों के परिजनों की पहचान, दस्तावेजी प्रक्रिया और अन्य जरूरी औपचारिकताओं में सहायता करेगा। इस कैंप कार्यालय के माध्यम से परिजन हर समय संपर्क कर सकते हैं और उन्हें तत्काल सहायता प्रदान की जा रही है।

पीड़ित परिवारों को अंतिम संस्कार में शामिल होने का अवसर देने के लिए तेलंगाना सरकार ने भी कदम उठाए हैं। इसके तहत लगभग 50 सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल हैदराबाद से मदीना के लिए रवाना हो गया है। सऊदी अरब के नियमों के अनुसार मृतकों का अंतिम संस्कार वहीं किया जाना है, और इसे लेकर सभी कानूनी औपचारिकताओं का ध्यान रखा जा रहा है।

इस दुर्घटना ने परिवारों और स्थानीय समुदाय में भारी शोक और संवेदनाएँ पैदा कर दी हैं। मृतकों के परिजन और नजदीकी इस हादसे को अभी तक झेल नहीं पाए हैं। भारतीय दूतावास ने 24×7 कंट्रोल रूम सक्रिय किया है, जिससे परिजन लगातार संपर्क में रह सकें और हर प्रकार की सहायता प्राप्त कर सकें। अधिकारियों के अनुसार, 54 सदस्यीय दल में कुछ लोग संयोगवश बस में नहीं सवार थे, जिससे उनकी जान बच गई।

हादसे ने यह सवाल भी उठाए हैं कि तीर्थ यात्रा और अंतरराष्ट्रीय यात्राओं में सुरक्षा मानकों पर और कड़ी निगरानी की आवश्यकता है। बस और टैंकर की आपसी टक्कर और आग फैलने की तेज़ी ने स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी यात्राओं में इमरजेंसी रेस्पॉन्स और बचाव उपकरणों की अनुपस्थिति जानलेवा साबित हो सकती है।

इस हादसे ने पूरे तेलंगाना और भारत के अन्य हिस्सों में मातम का माहौल पैदा कर दिया है। स्थानीय प्रशासन और केंद्र सरकार पीड़ित परिवारों की हर संभव सहायता कर रही है और मृतकों के परिजनों को मानसिक और कानूनी सहायता देने की पूरी तैयारी की गई है। अब्दुल शोएब की जीवित बचने की कहानी परिवारों और लोगों के लिए सांत्वना का स्रोत बन गई है, लेकिन इस हादसे ने उन रिश्तों को हमेशा के लिए तोड़ दिया है जिनमें प्रियजन एक झटके में चले गए। भारतीय दूतावास और सऊदी अधिकारियों ने यह सुनिश्चित किया है कि मृतकों के अंतिम संस्कार के दौरान सभी प्रोटोकॉल और सुरक्षा मानकों का पालन किया जाए। हादसे के बाद राहत कार्य और फॉरेंसिक जांच जारी हैं, ताकि दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

इस भयानक हादसे ने एक बार फिर याद दिलाया कि धार्मिक यात्राओं में सुरक्षा सर्वोपरि होनी चाहिए और यात्रियों की सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाना अनिवार्य है।

संपादकीय

न्यायसंगत आरक्षण

हाल ही में भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई द्वारा अनुसूचित जाति आरक्षण के लिए क्रीमी लेयर सिद्धांत का समर्थन करने से एक महत्वपूर्ण तार्किक चर्चा फिर से प्रारंभ हो गई है। जिसका मकसद है कि कैसे सकारात्मक पहल करके आरक्षण के उद्देश्य को अधिक न्यायसंगत, लक्षित और प्रभावी बनाया जा सकता है। वास्तव में उनकी पहल का मकसद संवैधानिक सुरक्षा को कमजोर करने का नहीं है। बल्कि यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि आरक्षण का लाभ उन लोगों तक पहुंचे, जिन्हें वास्तव में इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। यानी कि अनुसूचित जाति समुदाय के सबसे गरीब, सामाजिक रूप से सबसे अधिक वंचित और आरक्षण के लाभ में सबसे कम प्रतिनिधित्व करने वाले वर्ग को लाभ पहुंचाने का मकसद पूरा करना। बहुत संभव है कि मुख्य न्यायाधीश के इस विचार से असहमति के तर्क दिये जाएं। वास्तव में, देश में दशकों से आरक्षण की बहस कोटा बढ़ाने पर केंद्रित रही है, लेकिन उनके न्यायसंगत वितरण की दिशा में पर्याप्त पहल नहीं हो पायी है। निर्विवाद रूप से अनुसूचित जाति समुदाय के एक छोटे, अपेक्षाकृत बेहतर आर्थिक-सामाजिक स्थिति वाले वर्ग ने ही बार-बार शिक्षा और सरकारी रोजगार के अवसरों का लाभ उठाया है। वहीं दूसरी ओर पीढ़ी दर पीढ़ी अभावों के भंवर-जाल में फंसे परिवार- मसलन श्रमिक, सफाई कर्मचारी, भूमिहीन मजदूर परिवार लगातार हाशिये पर ही बने हुए हैं। यदि आरक्षण का मूल उद्देश्य संरचनात्मक असंतुलन को ही ठीक करना है तो इसके लाभ सीमित दायरे के लोगों को ही नहीं मिलना चाहिए। उल्लेखनीय है कि ओबीसी वर्ग के लिये यह प्रावधान सफलतापूर्वक लागू किया जा चुका है। इसमें दो राय नहीं कि क्रीमी लेयर का सिद्धांत आरक्षण लाभ में इस तरह के एकाधिकार को रोकने का एक सशक्त साधन है। इस प्रावधान का वंचित अनुसूचित जातियों तक विस्तार करना एक बुनियादी सच्चाई को स्वीकार करता है कि सामाजिक गतिशीलता, हालांकि सीमित स्तर पर कुछ ही लोगों के लिये संभव हुई है। साथ ही अवसरों के अधिक न्यायसंगत वितरण को सुनिश्चित करने के लिये नीति को अनुकूलित किया जाना वक्त की जरूरत है।

वास्तव में वर्तमान स्थिति आरक्षण के न्यायसंगत लाभ वंचित वर्ग तक पहुंचाने में तार्किक नजर नहीं आती। जब किसी आईएएस अधिकारी या वरिष्ठ अधिकारी का बच्चा सामाजिक रूप से हाशिये पर गए वर्ग के किसी व्यक्ति के मुकाबले समान लाभों का दावा करना जारी रखता है तो इससे लक्षित उद्देश्य कमजोर हो जाता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि क्रीमी लेयर को बाहर करने पर उनके जातिगत भेदभाव होने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन यह केवल यही दर्शाता है कि किसी भी ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित समूह के भीतर, वंचितता की स्थिति अलग-अलग होती है। ऐसी अवस्था में, सबसे निचले स्तर के लोग राज्य के संरक्षण पाने के लिये प्राथमिकता के हकदार हैं। निश्चित रूप से स्पष्ट मानदंड, सामाजिक पिछड़ेपन का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करने और दुरुपयोग को रोकने के लिये कारगर सुरक्षा उपाय होने चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई की टिप्पणी इस बात की ही परिचायक है कि सामाजिक न्याय का विस्तार होना चाहिए। अनुसूचित जातियों के आरक्षण से क्रीमी लेयर को सोच-समझकर बाहर करने से समानता के संवैधानिक वायदे की पुष्टि हो सकती है। इस पहल के विरोध में यह तर्क दिया जा सकता है यदि अनुसूचित जाति वर्ग के आरक्षण के उपवर्गीकरण को मान्यता दी जाती है, तो पहले इससे लाभान्वित लोगों को सुरक्षा कवच न मिल सकेगा। उनका तर्क हो सकता है कि कई बार आरक्षित वर्ग के किसी व्यक्ति को उच्च पद पर पहुंच जाने के बावजूद किसी भेदभाव व उपेक्षा का सामना करना पड़ सकता है। निस्संदेह, इस कथन की तार्किकता विचारणीय है। लेकिन इसका एक निष्कर्ष यह भी हो सकता है कि सामाजिक विसंगति और आर्थिक विषमता दूर करने का एकमात्र साधन आरक्षण ही नहीं हो सकता है। यहां यह भी विचारणीय होना चाहिए कि कई पीढ़ियों से आरक्षण लाभ पा चुके लोग, स्वेच्छा से उसका परित्याग करें तो इस दिशा में धनात्मक वातावरण बन सकता है। निश्चित रूप से ऐसे कदमों से मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई की सकारात्मक पहल को संबल मिल सकेगा।

समाजवाद से दूरी ने कहीं का नहीं छोड़ा

> “जिस तरह लालू परिवार की सिरफुट्टौवल की बातें चारदीवारी से बाहर आ रही हैं, उससे साबित हो रहा है कि लालू अपनी पार्टी के सिर्फ कहने भर के अध्यक्ष हैं। पार्टी पर उनकी बजाय तेजस्वी यादव की पकड़ कहीं ज्यादा मजबूत है। एक तरह से कह सकते हैं कि तेजस्वी ही इस पार्टी के मालिक हैं।

बिहार में एनडीए की जीत को अपने-अपने नजरिए से देखा और विश्लेषित किया जा रहा है। बिहार में एनडीए की जीत के पीछे किसी को चुनाव आयोग की मिलीभगत दिख रही है तो किसी को सत्ता का दुरूपयोग तो कोई इसे भीतरघात के रूप में देख रहा है। लेकिन किसी ने इस तथ्य पर ध्यान दिया कि बिहार के पूरे प्रचार अभियान में सत्ता के दावेदार विपक्षी गठबंधन ने कितनी बार कर्पूरी ठाकुर का नाम लिया, लोहिया की सप्त क्रांति की बात छोड़िए, कितनी बार जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की चर्चा हुई? यह सवाल इसलिए जरूरी और वाजिब लगता है, क्योंकि महागठबंधन की अगुआई जो राष्ट्रीय जनता दल कर रहा है या कर रहा था, घोषित तौर पर लालू प्रसाद यादव उसके प्रमुख हैं। जो नहीं जानते हैं, उनके लिए यह बताना जरूरी है कि लालू यादव जिस आंदोलन की उपज माने जाते हैं, उस जेपी आंदोलन के अगुआ जयप्रकाश नारायण रहे हैं। जयप्रकाश नारायण कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे और लालू यादव के राष्ट्रीय जनता दल घोषित तौर पर समाजवादी विचारधारा वाला दल है। जिस तरह लालू परिवार की सिरफुट्टौवल की बातें चारदीवारी से बाहर आ रही हैं, उससे साबित हो रहा है कि लालू अपनी पार्टी के सिर्फ कहने भर के अध्यक्ष हैं। पार्टी पर उनकी बजाय तेजस्वी यादव की पकड़ कहीं ज्यादा मजबूत है। एक तरह से कह सकते हैं कि तेजस्वी ही इस पार्टी के मालिक हैं। तेजस्वी जिन लोगों से घिरे हुए हैं, उन्हें तपी-तपाई समाजवादी विचारधारा से कुछ लेना-देना नहीं है। पार्टी भले ही घोषित रूप से समाजवादी हो, लेकिन हकीकत में पार्टी पर वामपंथी वैचारिक धारा का कब्जा है। तेजस्वी के करीबी संजय यादव और रमीज का नाम घर से बाहर निकाले गए तेजप्रताप यादव ने कभी खुलकर नहीं लिया,

लेकिन घर से बेआबरू होकर निकली लालू यादव की दूसरी बेटी रोहिणी ने दोनों का खुलकर नाम ले लिया है। वैसे बिहार में पहले से ही चर्चा थी कि तेजस्वी को इन्हीं दोनों नामों पर भरोसा है। पता नहीं, इन दोनों ने हाथ तेजस्वी कौन की नस दबी है, लेकिन अब साफ हो गया है कि परिवार की कीमत पर अगर तेजस्वी इन पर भरोसा करते हैं तो तय है कि इसके पीछे कुछ न कुछ गंभीर कारण जरूर हैं। उनकी सियासी प्रतिभा नहीं। अगर उनकी सियासी प्रतिभा होती तो बेशक तेजस्वी आज सरकार बनाने की स्थिति में नहीं होते, लेकिन कम से शर्मनाक हार के किनारे पर उनका दल नहीं पहुंचा होता।

जनता दल से अलग राष्ट्रीय जनता दल गठित करते वक्त ही तय हो गया था कि समाजवादी दर्शन की खोल में राष्ट्रीय जनता दल परिवारवाद का परचम लहराने की कोशिश करेगा। उसने लहराया भी, लेकिन उसने गांधी, लोहिया और जयप्रकाश के नाम का मुखौटा धारण किए रखा। 2025 का विधानसभा चुनाव पहला ऐसा चुनाव रहा, जिसमें ना तो टीवी और अखबारी चर्चाओं में इस दल ने लोहिया, जयप्रकाश या कर्पूरी ठाकुर का नाम लिया, ना ही मैदानी चुनावी सभाओं में इस पर फोकस किया गया। राष्ट्रीय जनता दल का टेलीविजन चैनलो पर पक्ष रखने के लिए तीन महिलाएं आगे कर दी गईं। प्रियंका भारती, कंचना यादव और सारिका पासवान को सौम्य और मृदु मृत्युंजय तिवारी और पढ़ाकू बौद्धिक मनोज झा के मुकाबले तवज्जो दी गई। तीनों महिलाएं बहस कम, बदतमीजी ज्यादा करती दिखीं। उन्हें लगा कि दबंग आवाज में अपनी बात रखेंगे तो वह दूर तक सुनी जाएगी। इन्होंने अपने विपक्षी नेताओं को खुलेआम अपशब्द कहे, उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश की। आधुनिक टेलीविजन विमर्श के बड़े और गंभीर चेहरे सुधांशु त्रिवेदी से प्रियंका ने जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कंचना ने तो शुभ्रास्था के साथ सड़क छाप भाषा का इस्तेमाल किया। प्रियंका और कंचना भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लालगढ़ के रूप में विख्यात जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की छात्राएं हैं। यह ठीक है कि जेएनयू पढ़ाई का संस्कार तो देता है, लेकिन उसका संकट यह है कि वह भारतीय समाज को वामपंथी चश्मे से देखने और समझने का जबर्दस्ती संस्कार थोप देता है। इसलिए यहां की वामपंथी राजनीति में पगा-डूबा छात्र समाज की हर समस्या के मूल को रामास्वामी पेरियार और महात्मा फुले के वैचारिक दर्शन के ही सहारे ढूंढ़ता है और उनके ही सुझाए अतिवादी विचारों के जरिए उन्हें सुलझाने की समझ विकसित करता है। प्रियंका और कंचना जेएनयू की उसी परंपरा में पगी-डूबी छात्रा हैं, इसलिए वे बिहार के समाज को भी उसी अंदाज में समझ रही थीं और अपने हिसाब से राष्ट्रीय जनता दल को उसी नजरिए से आगे बढ़ा रही थीं। इसका असर यह हुआ कि जिस बिहार की धरती से भारतीय समाजवाद ने राजनीतिक गलियारों तक की सफल यात्रा की थी, जिसके उत्तराधिकारी खुद लालू यादव भी रहे हैं, उस समाजवाद का सार्वजनिक विमर्श में भूले-भटके भी इस्तेमाल नहीं हुआ। जिस कर्पूरी ठाकुर की राजनीति के उत्तराधिकारी लालू रहे, उनका भी नाम नहीं लिया गया। जेपी और लोहिया की तो बात ही और है।

सवाल यह है कि लालू की पार्टी का जो कट्टर समर्थक यादव समुदाय है, क्या वह सचमुच पेरियारवादी है, वह फुले के वैचारिक दर्शन को मानता है। पेरियार और फुले जिस ब्राह्मणवाद की कटु आलोचना करते हैं, राजनीति को छोड़ दें तो यादव समाज भी वास्तविक जीवन में उतना ही ब्राह्मणवादी है। वह भी हिंदू है और कई बार तो कथित सवर्ण समाज से भी कहीं ज्यादा हिंदू है। वह भी उसी तरह पूजा-पाठ करता है, उसी तरह धार्मिक है, उसी तरह पारिवारिक संस्कार करता है, जैसा बाकी कथित ब्राह्मणवादी व्यवस्था वाले लोग करते हैं। ऐसे में सवाल यह है कि क्या राम मंदिर की आलोचना करना, छठ पूजा पर सवाल उठाना क्या आम यादव समुदाय को स्वीकार्य हो पाया होगा? वैसे राबड़ी देवी ने छठ पूजा छोड़ दी है। लेकिन उनकी छठ पूजा भी कभी बिहार के मीडिया माध्यमों के लिए बड़ी खबर बनी रहती थी। तेजप्रताप को राजद के इस विचलन का पता था, शायद यही वजह है कि उन्होंने अपने एक इंटरव्यू में अपील कर दी थी कि अब तेजस्वी जी की पत्नी को छठ पूजा का व्रत शुरू कर देना चाहिए। क्योंकि बिहार में सास से बहू छठ पूजा का उत्तराधिकार हासिल करती है। बहरहाल चुनाव नतीजों ने तो बता दिया कि बिहार में विपक्षी गठबंधन जिसे ब्राह्मणवादी व्यवस्था से दूर करने की कोशिश कर रहा था या दूर मान रहा था, वह भी दरअसल उसकी सोच के दूसरे बिंदु पर खड़ा है।

सवाल यह है कि आखिर राष्ट्रीय जनता दल से समाजवाद की विदाई क्यों हुई? इस सवाल का जवाब तलाशना कोई राकेट साइंस नहीं है। वामपंथी वैचारिकी के करीब होने के साथ ही तेजस्वी उस राहुल गांधी के भी करीब हैं, जिन्हें हर समस्या का समाधान वामपंथी सोच में ही नजर आती है। हिंदुत्व का विरोध उनका प्रमुख राजनीतिक दर्शन है। तेजस्वी भी यही कर रहे थे। इसे बढ़ावा देने में उनके सलाहकारों संजय यादव और रमीज ने भरपूर मदद दी है। प्रियंका, कंचना और सारिका जैसी बदमिजाज प्रवक्ताओं को प्रश्रय संजय यादव और रमीज की ही शह पर दिया गया। हर घर में सरकारी नौकरी देने का तेजस्वी के वायदे के पीछे वामपंथी अतिवादी वैचारिकी का ही हाथ रहा, नतीजा सामने है। बिहार की सत्ता छींका की तरह तेजस्वी और राष्ट्रीय जनता दल से दूर हो गई है। पेरियार और फुले की वैचारिकी पर आधारित राष्ट्रीय जनता दल अगर आने वाले दिनों में बिखराव की ओर चल पड़े तो हैरत नहीं होनी चाहिए। पारिवारिक बिखराव तो खैर शुरू हो ही चुका है।

प्रेरणा

मन की मिट्टी का चमत्कार

गुजरात की दोपहर उस दिन जैसे तपकर आग हो गई थी। दूर फैले खेतों में हवा की लहरें सूखी घास को छूकर गुज़रतीं, तो उनके सरसराने की आवाज़ किसी थके हुए पथिक की सांस-सी सुनाई देती। इसी सूखी पगडंडी पर एक अनोखा जुलूस बढ़ रहा था। उसके बीच में एक साधारण धोती-कुर्ते में, आंखों में गहरी शांति लिए, धूल-धूसरित पांवों के साथ एक व्यक्तित्व चल रहा था—आचार्य विनोबा भावे। उनके पीछे गांव के छोटे-बड़े, स्त्रियां-बालक, किसान-मजदूर, सब श्रद्धा से भरे थे। कोई दूर से फूल लेकर दौड़ता आ रहा था, कोई पानी की छोटी-सी मटकी लेकर उनके पैरों में रख देता, कोई बस उनके दर्शन मात्र से धन्य हो रहा था।

जब विनोबा गांव के भीतर प्रवेश कर रहे थे, तो वातावरण में एक अनकही आस्था फैल गई। घरों की छतों पर खड़ी महिलाएं थालियों में रोली चावल लेकर झूमती हुईं मंत्र फूंक रही थीं। बच्चों की आंखों में उत्साह था, बुजुर्गों के चेहरे पर संतोष, और युवाओं में यह इच्छा कि शायद आज गांव में कोई नई शुरुआत होगी, कोई नया बदलाव जन्म लेगा। इसी भीड़ को अलग करता हुआ गांव का बड़ा जमींदार आगे आया। वह अपने महंगे धोती-कुर्ते और मोतियों की माला में सजा हुआ था, चलने में घमंड था, बोलने में अधिकार। वह विनोबा के सामने झुककर बोला— “बाबा, आपके आगमन ने हमारा गांव पवित्र कर दिया। मैं आपकी भूदान यात्रा में योगदान देना चाहता हूँ। आप सिर्फ आदेश दीजिए—कितनी भूमि चाहिए?”

विनोबा ने उसकी आंखों में देखा। वह नजर जैसी धूल नहीं—मन को पढ़ने वाली थी। वे शांत मुस्कान के साथ बोले— “दान भूमि से नहीं, भावना से बड़ा होता है। दान संख्या में नहीं—हृदय की विशालता में मापा जाता है।”

जमींदार गर्व से मुस्कुराया और बोला— “बाबा, मेरे मन में भावना है। आप चाहें तो मेरी परीक्षा ले लीजिए, जिससे सिद्ध हो जाए कि मैं सच्चे मन से दान देना चाहता हूं।”

विनोबा कुछ पलों के लिए मौन हो गए। हवा भी जैसे थम गई। उनके भीतर से उतरकर आई आवाज निकली—

“ठीक है। परीक्षा चाहिए तो एक काम करो। तुम्हारे खेतों के पास जो बूढ़ा मजदूर रहता है, उसे अपने घर खाना खिलाओ। अपने साथ बैठाकर। जैसे किसी सम्मानित अतिथि को खिलाते हो।” वह वाक्य बिजली की तरह गिरा। जमींदार का चेहरा फीका पड़ गया। कंधे झुक गए। होठों पर कंपन आ गया। वह हकला कर बोला— “बाबा वह? वह तो अछूत जाति का है। उसे घर बुलाना मतलब मेरी प्रतिष्ठा लोग क्या कहेंगे? समाज क्या सोचेगा?”

विनोबा के स्वर में हल्की-सी करुणा और गहरी दृढ़ता थी— “जिस मन में भेद है, उस मन का दान अपवित्र है। भूमि का दान बाद में है पहले हृदय की भूमि तैयार करो। यदि एक मनुष्य को अपने समान बैठाकर खाना नहीं खिला सकते, तो भूमि के दान का क्या अर्थ?”

जमींदार अंदर तक काँप गया। भीड़ उसके मौन में खड़े संघर्ष को देख रही थी। उसके भीतर पुराने संस्कारों की जड़ें जोर से उसे रोक रही थीं—

“लोग हंसेंगे तुम पर उंगली उठेगी समाज से बहिष्कार होगा” लेकिन कहीं एक आवाज उठ रही थी— “सत्य से भागोगे तो जीवनभर भागते रहोगे” उस रात वह जमींदार बेचैन रहा। कभी आंगन में टहलता, कभी दीवारों पर लटके पूर्वजों के चित्रों को देखता, कभी अपनी प्रतिष्ठा की गांठ को कसता, कभी भीतर उठते भय को चुप कराता। पहली बार उसने खुद से सवाल किया— “क्या मेरा धर्म दूसरों को नीचे देखकर चलता है? क्या मेरी इज्जत इतनी नाजुक है कि एक इंसान को भोजन कराने से टूट जाएगी?

या फिर यह इज्जत सिर्फ अहंकार का दूसरा नाम है?”

उसी रात उसे नींद नहीं आई।

और कुछ ऐसा हुआ जो उसने कई जन्मों से नहीं किया था— उसने प्रार्थना की।

ईश्वर से नहीं—अपने ही भीतर से।

वह बोला— “हे मन, तू इतना छोटा क्यों है? कभी तो बड़ा बन।” अगली सुबह सूर्य की हल्की-सी रोशनी जैसे उसके मन पर भी पड़ गई।

वह हिम्मत बांधकर मजदूर की झोपड़ी की ओर चला। बूढ़ा मजदूर अपने घर के बाहर टूटी मिट्टी को बुहार रहा था। जब उसने देखा कि जमींदार उसके दरवाज़े पर खड़ा है, तो उसका झाड़ू हाथ से गिर गया।

“मालिक! आप यहाँ? मैंने कुछ गलती तो नहीं की?”

जमींदार का गला भर आया। से लगा कि वह जीवन में पहली बार किसी से बराबरी से बात कर रहा है।

उसने धीमे से कहा— “आज मेरे घर चलो। मेरे साथ भोजन करो। मेरे अतिथि बनो।” वृद्ध मजदूर के होंठ कांप गए। उसके चेहरे पर आश्चर्य, विनम्रता और अविश्वास का मिश्रण था। “मैं? आपके घर? मालिक मैं तो”

जमींदार ने उसका हाथ पकड़ लिया। “आज तुम मेरे सम्मान हो।”

गांव में हलचल मच गई। लोग घरों से झांक-झांककर देखने लगे। कुछ की भौंहें तनीं, कुछ की आंखें फैल गईं, कुछ की सोच बदलने लगी।

लेकिन उस क्षण जमींदार के कदम किसी नई राह पर थे। वह किसी आलोचना से नहीं—अपने भीतर के सत्य से चल रहा था। घर पहुंचकर उसने मजदूर को अपने बराबर बैठाया। रसोई में जाकर अपने हाथों से भोजन परोसा। उनके बीच चावल, दाल और सब्जी थी—

लेकिन वास्तव में उनके बीच सदियों से खड़ी दीवारें टूट रही थीं। जमींदार ने पहली बार उस बूढ़े को मनुष्य की तरह देखा। मजदूर ने पहली बार खुद को अपमानित नहीं—सम्मानित महसूस किया।

भोजन के बाद मजदूर की आंखों में चमक थी—

“मालिक आज मुझे लगा कि मैं भी किसी का हूँ। आज मेरा जीवन धन्य हो गया।” जमींदार की आंखें भर आईं। वह विनोबा के पास गया और बोला— “बाबा, आज समझ आया भूमि का दान तो शरीर से होता है, पर यह जो मन का दान है यह आत्मा को बदल देता है। यह दस एकड़ भूमि आपकी यात्रा को अर्पित है।” विनोबा भावे मुस्कुराए। उनकी मुस्कान में किसी ऋषि की शांति थी—

“आज तुमने सिर्फ भूमि नहीं दी तुमने अपने भीतर की कठोर धरती को उपजाऊ बना दिया। यही असली दान है। बाकी सब तो उसकी परछाइयाँ हैं।” सूर्य ढल रहा था, लेकिन उस जमींदार के भीतर जो सूरज उगा था,

वह अब जीवनभर नहीं ढलने वाला था—

मानवता का, करुणा का, और अंतःकरण की शुद्धि का सूरज।

वामपंथी सोच के शिकंजे में कांग्रेस, सही मुद्दों और लोकमर्म को छूने वाले विचारों से दूर

बिहार की 243 सीटों वाली विधानसभा में कांग्रेस 61 सीटों पर चुनाव लड़ी और सिर्फ छह सीटें हासिल कर सकी, फिर भी राहुल की वैचारिकी और रणनीति पर पार्टी में सवाल नहीं उठ रहा है। राहुल बिहार में इसलिए नाकाम हुए, क्योंकि वह अपना संदेश लोगों तक नहीं पहुंचा सके। राजनीति में प्रतीकों के जरिए लोक संदेश की स्थापित परंपरा है। शीर्ष नेताओं का आम लोगों से रस्मी मिलना-जुलना उनकी सदाशयता और सादगी के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गया है। किसी हस्ती का सामान्य दिखना और आम लोगों जैसे काम करना वोटरों के समर्थन की गारंटी माना जाता रहा है। यही वजह है कि राहुल गांधी जब भी ऐसा करते हैं, उनसे उम्मीदें बढ़ जाती हैं। यह बात और है कि राजनीति में कामयाबी पाने का यह टोटका कांग्रेस के लिए मुफीद नहीं रहा है। बिहार में राहुल गांधी ने आम आदमी बनने की कई कोशिशें कीं। ‘वोटर अधिकार यात्रा’ के दौरान मोजे पहने ही मखाने के पानी भरे खेत में वे उतरे और बाद में चुनाव प्रचार के दौरान मुकेश सहनी के साथ मछली पकड़ने के लिए तालाब में उतर गए। राहुल जब ऐसा करते हैं तो बौद्धिकों का एक तबका इसे अभूतपूर्व कदम साबित करने लगता है। हरियाणा चुनाव के दौरान सोनीपत में जब राहुल गांधी ने धान-रोपाई की और ट्रैक्टर चलाया, तब भी ऐसी ही उम्मीदों के पंख लग गए थे। ‘भारत जोड़ो न्याय यात्रा’ के दोनों चरणों में भी ऐसे कई सारे नजारे दिखे। तब एक वर्ग की नजर में राहुल गांधी की ऐसी कोशिशों से राजनीति बदलने लगी थी, लेकिन तेलंगाना छोड़, उनके ऐसे कदमों का कोई चुनावी फायदा नहीं मिला। सवाल है कि राहुल गांधी के इन लोक लुभावन कदमों के बावजूद लोग कांग्रेस के साथ क्यों नहीं खड़ा हो रहे?

स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिनिधि पार्टी रही कांग्रेस अखिल भारतीय संगठन है। वह इस पर गर्व कर सकती है, लेकिन संगठन को गतिशील बनाने वाले सही मुद्दों और लोकमर्म को छूने वाले विचारों से वह लगातार दूर हो रही है। राहुल गांधी उन्हीं मुद्दों को ज्यादा उछालते हैं, जिन्हें उनके वामपंथी सलाहकार सुझाते हैं। बौद्धिक और अकादमिक जगत इससे चाहे जितना भी आकर्षित हो, जमीनी स्तर पर वे मुद्दे अस्वीकार्य हो चुके हैं। निजीकरण की कुछ खामियां हैं, लेकिन भूलना नहीं होगा कि निजीकरण ने चमक-दमक भी बढ़ाई है। भले ही एक वर्ग तक निजीकरण की रोशनी नहीं पहुंच सकी है, लेकिन उस वर्ग का भी सपना चमक को हासिल करना है। वामपंथी वैचारिकी इसे नहीं समझती। वह जाहिर करती रही है कि अतीत की तरह अब भी समूचा देश अंधेरे में डूबा है। इन्हीं वामपंथी सलाहकारों के कारण कांग्रेस के अंदरूनी हालात ऐसे बन गए हैं कि कुछ वरिष्ठ नेता पार्टी को उबारने को लेकर राय देने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं। उन्हें डर ये है कि कड़वी दवा सुझाना उनके लिए हानिकारक हो सकता है। लिहाजा वे राय देने से बच रहे हैं।

कांग्रेस आलाकमान के तमाम सलाहकारों का सामाजिक सोच जमीनी हकीकत के बजाय वामपंथी दर्शन से ज्यादा प्रभावित है। इसके अनुसार ऊंच-नीच और जात-पांत का विचार समूचे देश में एक जैसा है, लेकिन यह अधूरा सच है। जातिवाद देश की एक कड़वी सच्चाई है, लेकिन आज जाति और मजहब के संदर्भ में समूचे देश को एक फार्मूले से समझना संभव नहीं। राहुल गांधी के सलाहकारों की टीम उन्हें इसी फार्मूले पर बार-बार आगे बढ़ने का सुझाव देती है और वह एक ही गलती दोहराते जा रहे हैं। समूचा देश न तो एक तरह से सोचता है, न ही उसका एक-सा व्यवहार है। शीर्ष नेतृत्व की सलाहकार मंडली अलग-अलग हिस्सों की माटी के रंग, व्यवहार और विचार से बहुत दूर है।

राहुल गांधी को इंदिरा गांधी से सीखना चाहिए। भारतीय समाज को लेकर इंदिरा की समझ गहरी थी। यही वजह है कि वक्त और इलाके की परंपरा के मुताबिक किसी इलाके में ठेठ बहू बन जाती थीं तो किसी इलाके में आधुनिक महिला। कुछ इलाकों में वे अपने सिर पल्लू रखती थीं तो कुछ इलाकों में नहीं। आज इंदिरा रहतीं और वैसा करतीं तो शायद कांग्रेस के मौजूदा सिपहसालारों की नजर में वे दकियानूस मान ली जातीं। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कांग्रेस की छतरी तले कई विचारधाराएं काम कर रही थीं।

इंदिरा काल के किंचित वामपंथीकरण को छोड़ दें तो पार्टी का नजरिया ज्यादातर मध्यमार्गी और समाजवादी ही रहा। इंदिरा काल में वामपंथी प्रभाव इतना नहीं रहा कि कांग्रेस अपनी बुनियादी विचारधारा को ही बदल दे, लेकिन आज पार्टी पर वामपंथ का खूब असर है। इसलिए उसके मुद्दे भी उससे प्रभावित हैं। वाम वैचारिकी हर मुद्दे को नैरेटिव विशेष के लिहाज से उछालती है। सांप्रदायिकता, मजहब और जाति से जुड़े उसके विचार पारंपरिकता से इतर हैं। भाजपा के खिलाफ हर बार सांप्रदायिकता को मुद्दा बनाना इसी मंडली की कारसाजी होती है। इसका कैसे प्रतिकार करना है, भाजपा ने इसका सूत्र खोज लिया है। इसीलिए वह ज्यादातर चुनावों में कांग्रेस को मात दे रही है। अपनी सोच के चलते ही कांग्रेस यूपी, बिहार जैसे राज्यों में उन दलों के छोटे भाई की भूमिका तक सीमित हो गई है, जिनका उदय गैरकांग्रेसवाद की बुनियाद पर हुआ। साक्षर और सूचना से लैस लोग इन प्रतीकों के छुपे संदेशों को समझने-बूझने लगे हैं, लेकिन कांग्रेस इसे नहीं समझ पा रही।

अभियान

अदृश्य करुणा सागर की गोद में बहती मानव जीवन की अनंत धारा

मानव जीवन एक अनवरत प्रवाह की तरह है, जो कभी शांत बहती नदी की भांति लगता है और कभी उफनते समुंदर में बदल जाता है। आज की जीवनशैली में गति इतनी तेज़ हो गई है कि मनुष्य खुद भी समझ नहीं पाता कि वह किस दिशा में दौड़ रहा है। प्रतिस्पर्धा, आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ और सामाजिक दायित्व—इन सबकी कसावट मानव को भीतर से इतना थका देती है कि वह कई बार यह महसूस करने लगता है कि जैसे उसका जीवन किसी अदृश्य मशीन का एक छोटा-सा पुर्जा बनकर रह गया है। लेकिन जब मन थोड़ा ठहरता है, जब आत्मा किसी क्षण में अपनी थकान से बाहर निकलकर जीवन को दूर से देखने की कोशिश करती है, तब एक बहुत अद्भुत सत्य सामने आता है—कि इस सम्पूर्ण अस्तित्व का संचालन किसी गहन करुणामयी शक्ति द्वारा हो रहा है, जो हमें हर क्षण संभाले रहती है।

हम अपने जीवन में प्रतिदिन अनेक लोगों से मिलते हैं—कुछ को भूल जाते हैं, कुछ स्मृति का हिस्सा बन जाते हैं, और कुछ ऐसे होते हैं जो हमारे जीवन की दिशा ही बदल देते हैं। यह सब परिवर्तन हमें कभी खुश करता है, कभी चिंतित, और कभी कई प्रश्नों में उलझा देता है। क्यों कोई आता है? क्यों कोई चला जाता है? क्यों कोई अवसर मिलता है और क्यों कभी राह बंद हो जाती है? इन प्रश्नों का उत्तर तब ही मिलता है जब हम अपनी चेतना को उस परमसत्ता से जोड़ते हैं, जो हर घटना को किसी अदृश्य ताने-बाने में पिरोकर हमारे सामने प्रस्तुत करती रहती है।

मनुष्य संकट के समय सबसे अधिक ईश्वर को याद करता है। जब कोई आर्थिक कठिनाई आ जाती है, जब परिवार में तनाव हो जाता है, जब स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है, जब मित्र छोड़ देते हैं, जब आत्मविश्वास टूटने लगता है—तब मन तुरंत उस परमशक्ति की शरण में पहुँच जाता है। हम उसकी ओर देखते हैं, उसकी प्रार्थना करते हैं, उससे संरक्षण की याचना करते हैं। और आश्चर्य की बात यह है कि कई बार बिना किसी स्पष्ट कारण के, परिस्थितियाँ बदलने लगती हैं। जैसे कोई अदृश्य हाथ हमें गिरते हुए संभाल लेता है, जैसे कोई अनजानी आवाज़ कहती है, ‘‘ठहरो, तुम अकेले नहीं हो।’’

जब संकट दूर होता है, जब जीवन फिर मुस्कुराने लगता है, तब मन कृतज्ञता से भर उठता है। लेकिन मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि धीरे-धीरे वह इस कृतज्ञता को भूलने लगता है और यह समझने लगता है कि सारी उपलब्धियाँ उसकी अपनी मेहनत और सामर्थ्य की देन हैं। वह भूल जाता है कि मेहनत करना उसका कर्तव्य है, पर फल देना किसी उच्च शक्ति का कार्य है।

हर घटना के समय का भी अपना रहस्य है। हम कई बार सोचते हैं कि काश यह घटना पहले हो जाती या यह कष्ट पहले ही टल जाता। लेकिन समय का चयन मनुष्य नहीं करता। वही परम चेतना हर घटना को तभी प्रकट करती है जब वह हमारे लिए सबसे अधिक उपयुक्त होती है। जैसे कोई अनुभवी माली यह जानता है कि कौन-सा बीज किस मौसम में बोया जाए ताकि पौधा सुरक्षित उग सके, वैसे ही वही परमसत्ता जानती है कि मनुष्य किस समय किस अनुभव के लिए तैयार है।

यदि मनुष्य अपने हर कार्य को इस भावना से करे कि वह किसी दिव्य इच्छा का माध्यम मात्र है, तो कार्य बोझ नहीं बनता, साधना बन जाता है। प्रेरणा जब भीतर से जागती है, तो कर्म में एक अद्भुत ऊर्जा उतरती है। इस ऊर्जा के साथ किया गया प्रत्येक कार्य अंततः सफल ही होता है, चाहे फल देर से ही क्यों न मिले।

कर्म पर ही अधिकार है, फल पर नहीं—यह बात मन जितनी गहराई से स्वीकार करता है, उतनी ही शांति उसके भीतर उतरती जाती है। फल की चिंता मन को कमजोर करती है, जबकि समर्पण मन को दृढ़ बनाता है। समर्पण का अर्थ हार नहीं, बल्कि यह स्वीकार कि ‘‘मैं अकेला नहीं हूँ, कोई शक्ति मेरे साथ चल रही है।’’ यह एहसास जीवन को बदल देता है।

कृतज्ञता जीवन का सबसे पवित्र भाव है। जब मन हर छोटी घटना के लिए भी धन्यवाद देता है—सूर्योदय की रोशनी के लिए, किसी अनजान व्यक्ति की मुस्कान के लिए, एक दिन की सुरक्षा के लिए—तो जीवन का प्रत्येक क्षण दिव्य हो उठता है। यह कृतज्ञता आत्मा को हल्का करती है, मन को निर्मल करती है और व्यक्ति के भीतर प्रेम, करुणा और शांति का विस्तार करती है।

यदि मनुष्य अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भीतर से आध्यात्मिक बना रहे—न किसी से द्वेष करे, न किसी के प्रति छल रखे, न अहंकार के भार से दबे—तो उसका जीवन स्वयं एक संदेश बन जाता है। उसके शब्दों में मिठास आ जाती है, उसके व्यवहार में सौम्यता, और उसकी उपस्थिति में एक सहज शांत ऊर्जा बहने लगती है। वह जहाँ भी जाता है, वहाँ वातावरण सकारात्मक हो जाता है। लोग उससे प्रेरणा लेते हैं, उसकी बातों में विश्वास पैदा होता है, और उसकी निष्ठा से समाज में परिवर्तन की एक नई लहर उठती है।

जीवन का सार यही है कि मनुष्य चलता रहे—कभी थककर, कभी ठहरकर, कभी रोकर, कभी मुस्कुराकर—but हमेशा उस अदृश्य शक्ति के साथ जुड़े रहकर, जिसने इस संसार की प्रत्येक धड़कन को निर्मित किया है।

वही शक्ति हमें संभालती है, उठाती है, आगे बढ़ाती है। वही शक्ति हमारी राहों को रोशन करती है, हमारी गलतियों को क्षमा करती है और हमारी हर साँस में अपनी कृपा की झलक छोड़ जाती है।

जीवन वास्तव में तभी सुंदर बनता है, जब मनुष्य उस परम करुणामयी सत्ता की छाया में स्वयं को सौंप देता है। उसके बाद हर क्षण एक नया चमत्कार बन जाता है, हर अनुभव एक नई सीख, और जीवन एक निरंतर आशीष।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

रोहिणी आचार्य का दोटूक जवाब—“एक बोतल खून देने से कांपने वाले किडनी दान पर प्रवचन न दें”

(जीएनएस)। पटना की राजनीति और सोशल मीडिया के माहौल में उस समय हलचल बढ़ गई जब राष्ट्रीय जनता दल (राजद) अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव को किडनी दान कर उनकी जान बचाने वाली उनकी बेटी रोहिणी आचार्य ने एक बार फिर अपने आलोचकों को कड़े और सीधे शब्दों में जवाब दिया। पिछले कई दिनों से सोशल मीडिया पर कुछ लोग उनके इस फैसले को लेकर अनावश्यक बहस छेड़े हुए थे—कभी इसे राजनीति से जोड़कर तो कभी ‘विवाहित बेटी’ के तर्क को लेकर। रोहिणी ने एक नई पोस्ट में इन सभी पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि जो लोग किडनी दान जैसे महान काम पर बेवजह टिप्पणी कर रहे हैं, वे पहले खुद यह तय करें कि वे मानवता और त्याग की कसौटी पर कहां खड़े हैं।

उन्होंने लिखा कि पिता के लिए किडनी देना उनके लिए कोई निर्णय नहीं, बल्कि एक बेटी का सहज कर्तव्य था। ऐसे लोग जो एक बोतल खून देने में घबराकर चेहरा पीला कर लेते हैं, वे किडनी दान जैसे बड़े त्याग पर ज्ञान बांटने निकल पड़ते हैं—यह सोचने वाली बात है। उन्होंने चुनौती भरे अंदाज में कहा कि जो लोग उनके इस फैसले पर सवाल उठा रहे हैं, वे खुलकर सामने आएं और तथ्यात्मक बहस करें। यह भी कहा कि यदि उनमें सचमुच दूसरों की भलाई करने का जज़्बा है तो वे अस्पतालों में महीनों से प्रत्यारोपण का इंतजार कर रहे गरीब मरीजों की मदद के लिए आगे आएं। मानवता का असली पैमाना वहीं दिखेगा, न कि सोशल मीडिया की शोरगुल वाली पोस्टों में।

रोहिणी ने व्यंग्य करते हुए कहा कि कई लोग सोशल मीडिया पर बैठकर बिना सोचे-समझे टिप्पणी कर देते हैं, लेकिन जब समाज के भले के लिए कुछ करने का वक्त आता है तो ऐसे लोग सबसे पहले गायब हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि उपदेश देने वालों को चाहिए कि वे खुद से शुरुआत करें और अंगदान जागरूकता को लेकर जागरूक अभियान चलाएं। जो खुद कभी किसी भले काम का उदाहरण पेश नहीं कर सके, वे किसी और के निजी फैसले पर उंगली उठाकर केवल अपनी सोच की संकीर्णता उजागर करते हैं।

अपनी टिप्पणी में उन्होंने हरियाणा के कुछ नेताओं, कुछ पत्रकारों और सोशल मीडिया ट्रोल समूहों का भी नाम लिए बिना जिक्र किया, जिनके बारे में उनका कहना है कि वे लगातार उनके फैसले पर सवाल उठाते हुए झूठे आरोप गढ़ते रहे हैं। उन्होंने कहा कि मीडिया बहसों में भी अक्सर तथ्यों के बजाय सनसनी को तवज्जो दी जाती है, जबकि किडनी दान जैसे संवेदनशील विषय को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। रोहिणी ने यह भी दोहराया कि यह पूरी प्रक्रिया उनके और उनके परिवार के लिए भावनात्मक और कठिन थी, लेकिन जब बात पिता की जान बचाने की हो, तो निर्णय लेने में एक पल की भी देर नहीं होती।

उन्होंने फिर कहा कि जीवन बचाना इंसानियत का सबसे बड़ा धर्म है और बेटी होकर यह फर्ज निभाना उनके लिए गौरव की बात है। जो लोग इसे राजनीति, परंपरा या अनावश्यक बहस में उलझा रहे हैं, उन्हें शायद त्याग की असली गहराई समझने की जरूरत है। अपनी पोस्ट के साथ उन्होंने एक वीडियो भी साझा किया, जिसमें वह एक पत्रकार से टीवी डिबेट में दिए गए विवादित बयान पर बात करती दिखाई देती हैं। इस पूरे बयान ने साफ कर दिया कि रोहिणी आचार्य अपने फैसले पर पूरी तरह अडिग हैं और आलोचकों को अब उनके तर्कपूर्ण और धैर्यपूर्ण जवाब के बाद कोई गुंजाइश नहीं बचती।

सीएम योगी बोले—अब अपराधियों के लिए उत्तर प्रदेश में कोई सुरक्षित कोना नहीं बचा

(जीएनएस)। गोरखपुर की धरती से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर साफ शब्दों में संदेश दिया कि उत्तर प्रदेश अब अपराधियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह नहीं रहा। उन्होंने कहा कि 2017 से पहले जिन परिस्थितियों में अपराधी बेलगाम घूमते थे, वे दिन अब खत्म हो चुके हैं। आज उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था ऐसी स्थिति में पहुंच चुकी है कि कोई भी अपराधी चाहे जितना चतुर क्यों न हो, न तो पुलिस की पकड़ से बच सकता है और न ही अदालत में साक्ष्यों के अभाव का फायदा उठा सकता है। मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि जीरो टॉलरेंस की नीति और वैज्ञानिक फॉरेंसिक जांच के बढ़ते दायरे ने अपराधियों को राज्य से भयभीत कर दिया है।

मुख्यमंत्री योगी मंगलवार को गोरखपुर स्थित नव-उन्नत क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला (आरएफएसएल) के छह मंजिला हाईटेक भवन के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। लगभग 72.78 करोड़ रुपये की लागत से तैयार यह अत्याधुनिक प्रयोगशाला पूर्वी उत्तर प्रदेश को जांच की वह क्षमता देगी, जो अब तक केवल चुनिंदा राज्यों में उपलब्ध थी। योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कभी फॉरेंसिक जांच सुविधाएँ इतनी सीमित थीं कि कई मामलों में पर्याप्त साक्ष्य होते हुए भी अपराधी बच जाते थे, लेकिन अब तस्वीर पूरी तरह बदल गई है। आठ वर्षों में फॉरेंसिक लैबों की संख्या चार से बढ़कर 12 हो गई है और छह और निर्माणाधीन हैं। उनका लक्ष्य है कि प्रत्येक कमिश्नरी में एक पूर्ण विकसित लैब उपलब्ध हो, ताकि किसी भी गंभीर अपराध में वैज्ञानिक जांच सुनिश्चित हो सके।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब साक्ष्य जुटाने के लिए हर जिले को दो मोबाइल फॉरेंसिक वैन उपलब्ध कराई गई हैं। घटनास्थल पर तुरंत पहुंचकर विशेषज्ञ टीम कुछ घंटों के भीतर सटीक प्रमाण जुटा सकती है। उन्होंने बताया कि भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य संहिता के लागू होने के बाद फॉरेंसिक सबूतों की भूमिका और व्यापक हो गई है, विशेषकर उन अपराधों में जहां सात वर्ष से अधिक की सजा का प्रावधान है। नए कानून अपराध की विवेचना को तकनीक-आधारित और अधिक पारदर्शी बनाते हैं।

भर्ती व्यवस्था पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि एक मजबूत कानून-व्यवस्था केवल कड़े कानूनों से नहीं, बल्कि पेशेवर बल से भी बनती है। इसी दिशा में पिछले आठ वर्षों में 2.19 लाख पुलिसकर्मियों की भर्ती की गई है। प्रशिक्षण क्षमता को दस गुना बढ़ाया गया है, ताकि भर्ती हुए सभी जवानों को राज्य के भीतर ही गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण मिल सके और नई आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें तैयार किया जा सके।

उन्होंने याद दिलाया कि कमिश्नरेट प्रणाली, जो पांच दशक तक फाइलों में अटकी रही, उसे 2020 में लागू किया गया और अब सात जनपदों में यह प्रभावी रूप से काम कर रही है। इसके साथ ही 17 नगर निगमों और नोएडा–ग्रेटर नोएडा को सेफ सिटी मॉडल पर विकसित किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि 13 लाख से अधिक सीसीटीवी कैमरों ने महानगरों की सुरक्षा को नए स्तर पर पहुँचा दिया है और अपराधियों के लिए छिपने की जगह लगभग खत्म कर दी है।

मुख्यमंत्री योगी ने पुलिस बल के विस्तार की जानकारी देते हुए कहा कि तीन नई महिला पीएसी बटालियन तैयार की गई हैं, जिससे राज्य की सुरक्षा व्यवस्था में महिला शक्ति का प्रभावी योगदान बढ़ेगा। कई जिलों में नई यूनिटों का निर्माण जारी है और दस जिलों में आधुनिक पुलिस लाइनें तेजी से खड़ी की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि “सबको सुरक्षा, सबको सम्मान” की भावना के साथ उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था पहले से अधिक मजबूत, सक्षम और संवेदनशील हुई है।

रेलवे ने थोक सीमेंट के माल ढुलाई शुल्क में कटौती की, निर्धन और मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए किफायती आवास में सहायता मिलेगी

▸▸ नई नीति के तहत निर्बाध डोर-टू-डोर लॉजिस्टिक्स समाधान के लिए अनुकूलित कंटेनर और नए बल्क सीमेंट टर्मिनल

(जीएनएस)। केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज कंटेनरों में थोक सीमेंट की दरों को विवेकपूर्ण बनाने और थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति का अनावरण किया। यह नीति सीमेंट परिवहन के लिए रेलवे सुधारों का एक हिस्सा है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने नई दिल्ली स्थित रेल भवन में नीति का अनावरण करते हुए इस क्षण को एक क्रांतिकारी बदलाव बताया। उन्होंने कहा कि इन सुधारों से मध्यम और निर्धन परिवारों के लिए अपने सपनों का घर बनाते समय सीमेंट की लागत कम हो जाएगी। नई नीति के अनुसार, दूरी और भार के स्लैब हटा दिए गए हैं। श्री वैष्णव ने बताया कि नई दर को फ्लैट सकल टन किलोमीटर पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर कर दिया गया है।

श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक संपूर्ण प्रदूषण मुक्त लॉजिस्टिक्स समाधान साबित होंगे। उन्होंने कहा कि भारत अब विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मालवाहक है, जिसने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। रेल नेटवर्क का विस्तार 4 किलोमीटर प्रतिदिन (2004-14 के दौरान) से बढ़कर 12-14 किलोमीटर प्रतिदिन हो गया है, जिससे यह तीन गुना से भी अधिक बढ़ गया है। ब्रॉड-गेज रेल नेटवर्क अब लगभग 100 प्रतिशत विद्युतीकृत है। श्री वैष्णव ने कहा कि वर्तमान में देश भर में 1,300 से अधिक अमृत स्टेशन विकसित किए जा रहे हैं।

टैंक कंटेनरों में थोक सीमेंट के लिए माल ढुलाई का विवेकीकरण

नई दर संरचना को सरल और युक्तिसंगत बनाया गया है, जिसमें वास्तविक टन भार पर आधारित शुल्क लागू किए गए हैं, जिसकी गणना ट्रेन के सकल टन किलोमीटर (जीटीकेएम) के रूप में की जाती है। व्यापार सुगमता बढ़ाने के लिए, पिछली दूरी और भार स्लैब को हटा दिया गया है। संशोधित प्रणाली के तहत, वास्तविक दूरी तय करने पर 0.90 रुपये प्रति टन प्रति किलोमीटर की एक समान दर से माल ढुलाई ली जाती है।

यह नीति थोक सीमेंट के लिए कुशल मल्टी मॉडल, समग्र लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा देने के लिए टैंक कंटेनरों के उपयोग को बढ़ावा देती है। टैंक कंटेनर थोक सीमेंट परिवहन के लिए एक प्रभावी संपूर्ण लॉजिस्टिक्स समाधान है और “मेक इन इंडिया” का एक गौरवशाली उत्पाद है। इसे 20 फीट × 8 फीट × 8.5 फीट के मानक आयामों के साथ डिज़ाइन किया गया है, जो 26 टन की पेलोड क्षमता और 31 टन का सकल भार प्रदान करता है। प्रत्येक कंटेनर केवल 25-30 मिनट के लोडिंग और अनलोडिंग समय के साथ कुशल संचालन की अनुमति देता है। इसका डिज़ाइन इसे निर्बाध मल्टी मॉडल परिवहन— ट्रेन से ट्रेलर और वापस ट्रेन तक आसानी से पहुंचा जा सकता है—के लिए आदर्श बनाता है जिससे उत्पादन बिंदु से उपभोग बिंदु तक सुचारू वितरण संभव होता है।

थोक सीमेंट टर्मिनलों के लिए नीति

विनिर्माण संयंत्रों से उपभोग केंद्रों के निकट टर्मिनलों तक विशेष वैगनों का उपयोग करने के जरिए थोक सीमेंट का परिवहन लागत-प्रभावी और पर्यावरण-अनुकूल दोनों है। कुशल लॉजिस्टिक्स की ओर इस बदलाव को और बढ़ावा देने के लिए, भारतीय रेलवे “बल्क सीमेंट टर्मिनल” नीति के तहत देश भर में बल्क सीमेंट टर्मिनलों के विकास को सुगम बनाएगा, जिससे सीमेंट का संचालन, भंडारण और वितरण अधिक सुचारू रूप से हो सकेगा।

निर्बाध लॉजिस्टिक्स सुनिश्चित करने के लिए, बल्क सीमेंट टर्मिनलों का निर्माण, संचालन और रखरखाव रेलवे नेटवर्क से सीधे संपर्क के साथ किया जाएगा। ये टर्मिनल हॉपर, साइलो, बैगिंग प्लांट और अन्य संबंधित अवसंरचना जैसी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित होंगे जिससे कि बल्क सीमेंट के कुशल संचालन, भंडारण और वितरण में सहायता मिल सके।

यह नीति कई प्रमुख लाभ प्रदान करती है, जिनमें सीमेंट परिवहन लागत में उल्लेखनीय कमी और सड़क परिवहन की तुलना में कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण गिरावट शामिल है। इससे पर्यावरणगत स्थिरता को बढ़ावा मिलता है और सड़कों पर भीड़भाड़ कम होती है। यह एक ही खेप में बड़ी मात्रा में सीमेंट की ढुलाई को संभव बनाती है और पैकेजिंग की आवश्यकताओं को कम करती है, साथ ही रिसाव से होने वाले सामग्री के नुकसान को भी कम करती है। इसके अतिरिक्त, यह नीति मशीनीकृत लोडिंग और अनलोडिंग के माध्यम से तेज टर्नअराउंड समय सुनिश्चित करती है, जिससे सीमेंट लॉजिस्टिक्स में समग्र दक्षता बढ़ती है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के समक्ष नागरिकों की समस्याओं व शिकायतों के ऑनलाइन निवारण का राज्य स्तरीय ‘स्वागत’ कार्यक्रम गुरुवार, 20 नवंबर को आयोजित होगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में हर महीने आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय स्वागत ऑनलाइन जनशिकायत निवारण कार्यक्रम के अंतर्गत नवंबर महीने का राज्य स्तरीय ‘स्वागत’ (स्टेट वाइड अटेंशन ऑन ग्रिवेंसेस बाई एप्लीकेशन ऑफ टेक्नोलॉजी) कार्यक्रम गुरुवार, 20 नवंबर, 2025 को आयोजित होगा।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से वर्ष 2003 से शुरू हुए स्वागत ऑनलाइन जनशिकायत निवारण कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य स्तरीय ‘स्वागत’ कार्यक्रम हर महीने आयोजित किया जाता है।

इसी कड़ी में, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में नवंबर 2025 का राज्य स्तरीय स्वागत ऑनलाइन जनशिकायत निवारण कार्यक्रम गुरुवार, 20 नवंबर को आयोजित होगा।

इस ‘स्वागत’ कार्यक्रम के लिए नागरिक अपनी शिकायतें-अभ्यावेदन गुरुवार, 20 नवंबर की सुबह 8:30 से 11:30 बजे के दौरान मुख्यमंत्री की जनसंपर्क इकाई, स्वर्णिम संकुल-2, गांधीनगर में व्यक्तिगत रूप से आकर दे सकते हैं।

लखनऊ जंक्शन स्टेशन पुनर्विकास कार्य

(जीएनएस)। लखनऊ जंक्शन स्टेशन के पुनर्विकास एवं मेजर अपग्रेडेशन कार्य के चलते 20 नवंबर से 22 दिसंबर, 2025 तक ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक के कारण प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

22 नवंबर, 2025 से 20 दिसंबर, 2025 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20921 बांद्रा टर्मिनस – लखनऊ साप्ताहिक एक्सप्रेस लखनऊ जंक्शन के स्थान पर ऐशबाग स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी।

इसी प्रकार, 23 नवंबर, 2025 से 21 दिसंबर, 2025 तक यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20922 लखनऊ – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक एक्सप्रेस लखनऊ जंक्शन के स्थान पर ऐशबाग स्टेशन से प्रस्थान करेगी।

अहमदाबाद मंडल का वर्ष 2025-26 में अप्रैल से अक्टूबर तक उत्कृष्ट प्रदर्शन

29.18 मिलियन टन माल लदान किया और 3865 करोड़ से अधिक का राजस्व प्राप्त किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के सात महीनों (अप्रैल–अक्टूबर 2025) में माल ढुलाई के क्षेत्र में अत्यंत उत्कृष्ट और उल्लेखनीय प्रदर्शन दर्ज किया है। कुल माल लोडिंग, औसत वैगन लोडिंग और माल राजस्व—तीनों में अहमदाबाद मंडल ने पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है। अक्टूबर 2025 तक अहमदाबाद मंडल ने कुल 29.181 मिलियन (MT) माल लोड किया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 5.92% अधिक है। जिसमें से गांधीधाम क्षेत्र से 22.779 मिलियन टन माल का सफलतापूर्वक परिवहन किया गया, जिससे मंडल को 3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ। औसत वैगन लोडिंग में भी अहमदाबाद मंडल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2842.49 वैगन प्रतिदिन लोड किए, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 2699.71 वैगन प्रतिदिन था, जो 5.29% की वृद्धि है। माल राजस्व में भी मंडल का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा है और इस वित्तवर्ष में अक्टूबर 2025 तक कुल 3865.22 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 2.63% अधिक है।

अहमदाबाद मंडल की प्रमुख नई उपलब्धियाँ (अप्रैल–अक्टूबर 2025)

▸▸ खाराघोड़ा से अनंतनाग (जम्मू) के लिए पहली बार एक मिनी रेक इंडस्ट्रियल साल्ट लोड की गई, जिससे कुल 27.34 लाख का राजस्व अर्जित हुआ।

▸▸ साणंद स्थित MHPL फ्रेट टर्मिनल से पहली रेफ्रिजरेटेड (रीफ़र) कंटेनर रैक पिपावाव पोर्ट के लिए लोड की गई जिससे 6.57 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ कडी को 24×7 संचालन वाले एक्सक्लूसिव कंटेनर रेल टर्मिनल (ECRT) के रूप में सफलतापूर्वक कमीशन किया गया, जिससे इनवर्ड और आउटवर्ड कंटेनर ट्रैफिक में उल्लेखनीय सुगमता और गति प्राप्त हुई।

▸▸ देवलिया स्थित वेस्टर्न केरियर GCT में पहली बार टाइल्स से लोड चार कंटेनर रेक्स लोड की गईं, जिनसे मंडल को कुल 1.49 करोड़ का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ कांकड़िया (KKF) से 20 BCN वैगनों वाली राहत सामग्री की एक मिनी रेक 11 सितंबर 2025 को पंजाब के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों (फिरोजपुर) के लिए भेजकर सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सिद्ध किया।

अहमदाबाद मंडल का कमोडिटी-वाइज प्रदर्शन (अप्रैल–अक्टूबर 2025)

▸▸ कंटेनर कमोडिटी में कुल 8442 रेक लोड किए गए और 1397.25 करोड़ का माल भाड़ा अर्जित किया गया।

▸▸ उर्वरक (Fertilizer) कमोडिटी में 2213 रेक लोड कर 1026.94 करोड़ का भाड़ा अर्जित किया गया।

▸▸ नमक (Salt) कमोडिटी में 1490 रेक लोड कर 597.26 करोड़ अर्जित किए गए।

▸▸ पेट्रोलियम (POL) कमोडिटी में 598 रेक लोड किए गए और 222.86 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।

▸▸ कोयला (COAL) कमोडिटी में 344 रेक लोड किए गए और 221.42 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।

▸▸ ऑटोमोबाइल्स कमोडिटी में कुल 1098 रेक लोड किए गए और 147.20 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ बेंटोनाइट कमोडिटी में 71 रेक लोड किए गए और 61.74 करोड़ का भाड़ा अर्जित किया गया।

▸▸ खाद्य तेल (EOIL) कमोडिटी में 206 रेक लोड किए गए और 59.41 करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।

▸▸ सीमेंट कमोडिटी में पहली बार 15 रेक लोड किए गए और कुल 7.60 करोड़ का माल भाड़ा अर्जित किया गया।

▸▸ अन्य (MISC ITEMS) कमोडिटी में 562 रेक लोड किए गए और 123.54 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

गांधीधाम क्षेत्र (कच्छ जिला)

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के अंतर्गत आने वाले गांधीधाम क्षेत्र ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के अप्रैल से अक्टूबर 2025 की अवधि में माल ढुलाई के क्षेत्र में अत्यंत सराहनीय प्रदर्शन दर्ज किया है। इस अवधि में कुल 10,181 रेकों के माध्यम से 22.779 मिलियन टन माल का सफलतापूर्वक परिवहन किया गया, जिससे मंडल को 3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ।

गांधीधाम क्षेत्र का कमोडिटी-वाइज प्रदर्शन (अप्रैल–अक्टूबर 2025)

▸▸ इस अवधि में 10,181 रेकों के माध्यम से 22.779 मिलियन टन माल का सफल परिवहन किया गया, जिससे मंडल को 3077.04 करोड़ का महत्वपूर्ण माल राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ कंटेनर कमोडिटी में 5866 रेकों द्वारा 10.586 MT की लोडिंग कर 1069.47 करोड़ अर्जित किए गए।

▸▸ उर्वरक (Fertilizer) में 2117 रेक लोड कर 5.973 MT के परिवहन से 988.10 करोड़ राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ कोयला (Coal) कमोडिटी में 345 रेकों द्वारा 1.396 MT की ढुलाई कर 221.55 करोड़ अर्जित किए गए।

▸▸ एडिबल साल्ट में 470 रेकों द्वारा 1.12 MT की लोडिंग कर 214.83 करोड़ का राजस्व हासिल हुआ।

▸▸ इंडस्ट्रियल साल्ट में 479 रेकों द्वारा 1.727 MT की लोडिंग से 205.46 करोड़ का योगदान मिला।

▸▸ पेट्रोलियम (POL) में 337 रेकों के माध्यम से 0.838 MT की लोडिंग कर 155.30 करोड़ अर्जित हुए।

▸▸ LPG में 238 रेकों से 0.276 MT की ढुलाई कर 65.66 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ बेंटोनाइट में 69 रेकों द्वारा 0.238 MT का परिवहन कर 61.08 करोड़ अर्जित किए गए।

▸▸ खाद्य तेल (Tank & Jumbo) कमोडिटी में 184 रेकों के माध्यम से 0.393 MT की संयुक्त लोडिंग कर 55.25 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।

▸▸ इसके अतिरिक्त जिप्सम, क्लिंकर, मोलासिस, दालें, शुगर, बॉम्बो पल्प आदि अन्य कमोडिटीज़ ने भी कुल राजस्व में महत्वपूर्ण और सराहनीय योगदान दिया।

भारत पर्व-2025 में झलका स्वदेशी का गौरव : पटोला से लेकर पश्मीना तक, विभिन्न कलाओं ने बिखेरा ‘एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ के हुनर का जादू

▸▸ एकता नगर में देश के कोने-कोने से आए 55 स्वदेशी स्टॉलों में दिखी भारतीय कला और कारीगरी की विविधतापूर्ण झांकी

▸▸ स्थानीय हस्तकला, हैंडलूम, जैविक उत्पाद, फूड आर्ट और ग्रामीण उद्योगों के कार्यक्रमों से एकता नगर में साकार हुआ ‘वोकल फॉर लोकल’ का सूत्र

▸▸ ‘भारत पर्व-2025’ महिलाओं और युवा उद्यमियों के लिए बना स्वदेशी रचनात्मक शक्ति का ‘प्लेटफॉर्म ऑफ प्राइड’

(जीएनएस)। गांधीनगर : एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में हाल ही में संपन्न हुए ‘भारत पर्व-2025’ ने इस भाव को बखूबी जीवंत किया कि स्वदेशी ही आत्मनिर्भर भारत का आधार है। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को समर्पित इस भव्य पर्व में देश के कोने-कोने से आए हस्त शिल्प कलाकारों, कारीगरों और उद्यमियों ने अपने स्वदेशी उत्पादों का प्रदर्शन किया। भारत पर्व का मुख्य आकर्षण यहां लगाए गए 55 स्वदेशी स्टॉल थे, जिन्होंने देश की विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का जीवंत प्रदर्शन प्रस्तुत किया। हरेक स्टॉल ने भारतीय ग्रामीण जीवन, उत्कृष्ट कारीगरी और लोकशैली का प्रतिनिधित्व किया। पंजाब के फुलकारी दुपट्टे, राजस्थान की हस्तनिर्मित पॉटरी, तमिलनाडु की कांजीवरम साड़ी, नागालैंड के बांस से बने उत्पाद और गुजरात की पटोला-बांधणी के आकर्षक रंग ने आगंतुकों को अपने-अपने प्रदेश की कला-कारीगरी की सतरंगी झलक दिखलाई।

‘वोकल फॉर लोकल’ के सूत्र को आगे बढ़ाने वाले इस उत्सव में स्थानीय उत्पादों और पारंपरिक कारीगरों को एक वैश्विक मंच मिला। इस उत्सव के दौरान नर्मदा नदी के तट पर स्थित एकता नगर स्वदेशी की भावना से ओतप्रोत और जगमगाता हुआ नजर आया। स्टॉल पर मौजूद युवा उद्यमियों, महिला स्वयं सहायता समूहों और हस्त शिल्प कलाकारों ने अपने हाथों की कला के जरिए देश की समृद्ध विरासत को शानदार तरीके से उजागर किया।

स्वदेशी स्टॉलों में विशेष रूप से ऑर्गेनिक (जैविक) खाद्य पदार्थ, आयुर्वेदिक उत्पाद, हैंडलूम फैब्रिक्स, रीसाइकिल मटेरीयल से बनी सजावटी कलाकृतियां तथा प्राकृतिक रंगों से बने कपड़े आगंतुकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बने। खास बात यह है कि यहां आगंतुकों ने केवल खरीदारी ही नहीं की, बल्कि उन्होंने प्रत्येक स्टॉल के पीछे छिपी कहानी, कारीगर की मेहनत और हुनर के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान का अनुभव भी किया।

‘भारत पर्व-2025’ केवल एक प्रदर्शनी ही नहीं, बल्कि यह आत्मनिर्भरता की दिशा में एक प्रेरणादायी अभियान भी सिद्ध हुआ, जहां ‘मेड इन इंडिया’ का गौरव पर्यटकों के दिल तक पहुंचा। लाइव म्यूजिक, लोकनृत्य, हस्तकला कार्यशाला और लजीज क्षेत्रीय भोजन के साथ यह उत्सव एक जीवंत भारतीय मेला बन गया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की तलहटी में मनाया गया यह पर्व केवल रंग-बिरंगी रोशनी से ही नहीं, अपितु भारत की आत्मा ‘स्वदेशी’ के उजियारे से भी जगमगा उठा, जिसने प्रत्येक भारतीय को स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का संदेश दिया।

दिल्ली ब्लास्ट पर विवादित टिप्पणी का विरोध बना जानलेवा, इटावा में पुलिसकर्मी पर चार युवकों का हमला

(जीएनएस)। इटावा की शांत रात अचानक डर, तनाव और उग्रता के माहौल में बदल गई, जब दिल्ली बम ब्लास्ट पर सरकार के खिलाफ की जा रही अभद्र टिप्पणियों का विरोध करना एक पुलिसकर्मी के लिए जानलेवा साबित हो गया। रेलवे स्टेशन बजरिया के पास रोज़मर्रा की हलचल के बीच मंगलवार की रात फ्रेंड्स कॉलोनी थाने में तैनात कांस्टेबल रविन्द्र सिंह, जो मथुरा के फरह क्षेत्र के महुवन गांव के निवासी हैं, ड्यूटी पूरी करके भोजन की तलाश में अंडा-राइस के ठेले पर पहुंचे थे। इसी दौरान वहां मौजूद चार युवक आपस में दिल्ली ब्लास्ट को लेकर सरकार पर अनर्गल, आपत्तिजनक और भड़काऊ टिप्पणियाँ करते हुए माहौल बिगाड़ रहे थे, जिससे स्थानीय लोग भी असहज हो उठे।

ठेला संचालक ने युवकों को सहज ही बताया कि सामने खड़े व्यक्ति पुलिसकर्मी हैं। यह सुनते ही चारों युवक अचानक ही तैश में आ गए। गालियों की बौछार शुरू हो गई और

माहौल देखते ही देखते तनाव में बदल गया। कांस्टेबल रविन्द्र सिंह ने जब संयमित होकर उन्हें अभद्र टिप्पणी करने से रोका और स्थिति शांत करने का प्रयास किया, तो युवकों ने खुद को वकील और पत्रकार बताकर पुलिसकर्मी को डराना शुरू कर दिया। उनका व्यवहार और अधिक आक्रामक होता गया और देखते ही देखते उन्होंने पुलिसकर्मी को घेरकर हाथापाई शुरू कर दी।

स्थिति तब भयावह हो गई जब एक आरोपी हाथ में ईंट लेकर कांस्टेबल पर जानलेवा हमला करने के इरादे से आगे बढ़ा। आसपास मौजूद लोग भयभीत होकर चीखने लगे, लेकिन युवक लगातार धमकाते रहे कि वे पुलिसकर्मी को जान से खत्म कर देंगे। इस मारपीट के दौरान कांस्टेबल रविन्द्र सिंह घायल हो गए और खुद को बचाने की कोशिश करते दिखाई दिए। वहीं एक राहगीर द्वारा बनाए गए वीडियो में एक आरोपी को हाथ में ईंट लिए सिपाही को धमकाते हुए साफ देखा जा सकता है, जो सोशल मीडिया पर वायरल होते ही पूरे पुलिस महकमे को भीतर तक हिला गया। सूचना मिलते ही पुलिस टीम तुरंत मौके पर पहुंची और घायल कांस्टेबल को अस्पताल ले जाकर उसका मेडिकल परीक्षण कराया। पुलिस ने घटनास्थल पर मौजूद गवाहों के बयान दर्ज किए और कार्रवाई शुरू की। जांच में जिन चार युवकों की पहचान हुई, वे थे—कफील उर्फ वकील साहब, अकील, दिलशाद और फैजान—सभी उर्दू मोहल्ला थाना कोतवाली क्षेत्र के निवासी। पुलिस रिकॉर्ड में इन चारों पर पहले से कई मुकदमे दर्ज पाए गए, जो यह दर्शाते हैं कि उनकी दबंगई और आपराधिक गतिविधियाँ लंबे समय से चर्चा में रही हैं। वीडियो वायरल होने के बाद क्षेत्र में आक्रोश की लहर दौड़ गई। लोगों का कहना है कि यह केवल एक पुलिसकर्मी पर हमला नहीं, बल्कि कानून व्यवस्था को खुली चुनौती है। स्थानीय जनता ने स्पष्ट रूप से कहा कि ऐसे मनबढ़ तत्वों को तुरंत गिरफ्तार कर सख्त सजा दी जानी चाहिए, ताकि भविष्य में कोई भी कानून की ताकत को कमतर समझने की गलती न करे।

इसी बीच प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार ने बताया कि चारों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और उनकी गिरफ्तारी के लिए टीमें लगातार दबिश दे रही हैं। उनके अनुसार जल्द ही चारों आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे और उन पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

इस घटना ने यह सवाल एक बार फिर खड़ा कर दिया है कि जब समाज में कुछ लोग खुलेआम पुलिसकर्मी पर हमला करने की हिम्मत दिखाने लगें, तो आम जनता की सुरक्षा कितनी मुश्किल हो जाती है। रेलवे स्टेशन बजरिया क्षेत्र की यह घटना कानून-व्यवस्था पर सीधी चोट की तरह सामने आई है, जिसने स्थानीय लोगों में गुस्सा और असुरक्षा की भावना दोनों बढ़ा दी है। लोग कह रहे हैं कि ऐसी घटनाओं को कठोर कार्रवाई के माध्यम से ही रोका जा सकता है, क्योंकि कानून का डर ही समाज को सुरक्षित और संतुलित रखता है।

आंध्र प्रदेश में माओवादी नेटवर्क पर बड़ा प्रहार, मुठभेड़ के बाद विभिन्न इलाकों से 31 नक्सली गिरफ्तार

(जीएनएस)। आंध्र प्रदेश के आदिवासी अंचलों में मंगलवार का दिन सुरक्षा बलों की बड़े पैमाने पर की जा रही कार्रवाई के नाम रहा। सुबह अल्लूरी सीतारामाराजू जिले के घने मारेदुमिल्ली जंगलों में हुई मुठभेड़ की गूंज अभी थमी भी नहीं थी कि कुछ ही घंटों बाद राज्य के अलग-अलग इलाकों में चलाए गए तेज़ अभियान के दौरान पुलिस ने माओवादी नेटवर्क को एक और बड़ा झटका देते हुए 31 नक्सलियों को गिरफ्तार कर लिया। मारेदुमिल्ली क्षेत्र में सुबह हुई भिड़ंत में जहां छह माओवादी मारे गए थे, वहीं कैंप के आसपास से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद भी सुरक्षा बलों के हाथ लगे, जिससे यह संकेत मिला कि इलाके में एक बड़ी गतिविधि की तैयारी चल रही थी।

एडीजी (खुफिया) महेश चंद्र लड्ढा और जिला एसपी अमित बरदार ने बताया कि पिछले दो दिनों से मिली लगातार खुफिया सूचनाओं के आधार पर व्यापक कॉम्बिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा था। जंगलों में चल रही गतिविधियों, बाहरी इलाकों में बढ़ती आवाजाही और कुछ संदेहास्पद संपर्कों के आधार पर सुरक्षा बलों ने अभियान का दायरा अचानक विस्तार किया, जिससे नक्सलियों के लिए बच निकलना मुश्किल हो गया। मुठभेड़ के बाद मिले हथियारों की संख्या और प्रकार इस बात का संकेत थे कि माओवादी किसी बड़े मूवमेंट की तैयारी में थे, जिसे समय रहते सुरक्षा एजेंसियों ने नाकाम कर दिया।

मुठभेड़ के बाद शुरू हुई छापेमारी विजयवाड़ा और काकीनाडा जैसे शहरी इलाकों तक पहुंची, जहां माओवादी अपने नेटवर्क को छिपाकर रखने की कोशिश कर रहे थे। सुरक्षा बलों ने विजयवाड़ा के पेनामलुरू क्षेत्र में एक घर को घेरकर दबिश दी तो वहां एक साथ 27 लोग पकड़े गए, जिनमें 21 महिलाएं और 6 पुरुष शामिल थे। बाद में जांच में यह जानकारी सामने आई कि ये सभी छत्तीसगढ़ के निवासी हैं और लंबे समय से दंडकारण्य क्षेत्र से संचालित माओवादी गतिविधियों से जुड़े हुए थे। इन गिरफ्तार लोगों में केंद्रीय समिति के सदस्य देवजी की सुरक्षा टीम के नौ सदस्य भी पाए गए, जो संगठन की कोर गतिविधियों से सीधे जुड़े होने के कारण सुरक्षा एजेंसियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। इसके अलावा काकीनाडा से चार अन्य माओवादियों को भी गिरफ्तार किया गया, जिनकी भूमिका और संपर्कों की जांच चल रही है। शुरुआती पूछताछ में कई अहम जानकारियां सामने आने लगी हैं, जिनसे यह संकेत मिलता है कि संगठन अपनी गतिविधियों को खत्म होते प्रभाव क्षेत्रों की जगह शहरों के निकट छिपे ठिकानों से संचालित करने की रणनीति बना रहा था। पूरे मामले पर वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि यह कार्रवाई माओवादी नेटवर्क पर बड़ा प्रहार है और पिछले कुछ वर्षों में मिली सबसे महत्वपूर्ण सफलता में से एक है। सुरक्षा एजेंसियां अब गिरफ्तार लोगों के संपर्कों, फंडिंग और ठिकानों की विस्तृत जांच में जुट गई हैं। अधिकारियों के अनुसार अभियान अभी खत्म नहीं हुआ है और आने वाले दिनों में और भी महत्वपूर्ण गिरफ्तारियां और बरामदगियां सामने आ सकती हैं। ग्रामीण से लेकर शहरी इलाकों तक में बढ़ाई गई सतर्कता ने माओवादी नेटवर्क को अस्थिर कर दिया है, जिससे सुरक्षा बलों को आगे की रणनीति बनाने में बढ़त मिल गई है। राज्य के कई हिस्सों में इस कार्रवाई को लेकर लोगों ने राहत की भावना व्यक्त की है, क्योंकि लंबे समय से आदिवासी और सीमावर्ती इलाकों में सक्रिय नक्सली गतिविधियों से आम नागरिकों में भय और असुरक्षा का माहौल बना हुआ था। सुरक्षा बलों की इस सफलता ने एक बार फिर संदेश दिया है कि सरकार और पुलिस माओवादी नेटवर्क के खिलाफ निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है और आने वाले समय में संगठन की कमर तोड़ने के प्रयास और भी तेज़ होंगे।

सड़क सुरक्षा को मजबूत करने के लिए गुजरात पुलिस का MapmyIndia के साथ ऐतिहासिक समझौता

(जीएनएस)। गुजरात पुलिस ने राज्य में सड़क सुरक्षा और यातायात प्रबंधन को एक नई ऊंचाई पर ले जाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण और दूरगामी पहल की है। पुलिस ने स्वदेशी नेविगेशन एप्लिकेशन मेपल्स (Mappls - MapmyIndia) के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह सहयोग सार्वजनिक सुरक्षा के लिए स्वदेशी तकनीक का लाभ उठाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

'हर घर स्वदेशी' अभियान और तकनीक को प्रोत्साहन

यह पहल गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष सांघवी के 'हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी' अभियान के साथ तालमेल बिठाती है। हाल ही में, उपमुख्यमंत्री ने सभी विभागों के साथ एक विशेष बैठक की थी, जिसमें स्वदेशी उत्पादों और तकनीकों को अपनाने पर ज़ोर दिया गया था।

इसी दिशा में, राज्य पुलिस प्रमुख विकास सहाय के मार्गदर्शन में, राज्य यातायात शाखा ने बेहतर यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वदेशी ऐप मेपल्स के साथ यह विशेष समझौता किया है।

वाहन चालकों के लिए रीयल-टाइम सुरक्षा सुविधाएँ

इस समझौते के तहत, मेपल्स ऐप ने गुजरात के वाहन चालकों की जरूरतों

के हिसाब से विशेष सुविधाएँ पेश की हैं। मानक नेविगेशन के अलावा, यह ऐप अब नागरिकों को कई महत्वपूर्ण सुरक्षा पहलुओं पर रीयल-टाइम ट्रैफ़िक सलाह और अपडेट प्रदान करता है।

ब्लैक स्पॉट अलर्ट: राज्य यातायात शाखा द्वारा उपलब्ध कराए गए ब्लैक स्पॉट (दुर्घटना संभावित क्षेत्र) और दुर्घटना क्षेत्रों के डेटा को ऐप में एकीकृत किया गया है। इससे ड्राइवरों को उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों के बारे में पहले से ही सचेत किया जाएगा, जिससे अप्रिय घटनाओं को रोकने में मदद मिलेगी।

गति सीमा की जानकारी: ऐप में गति सीमा की अद्यतन जानकारी भी शामिल की गई है। यह वाहन चालकों को नियमों का पालन करने और सड़क की स्थिति में बदलाव का अनुमान लगाने में सहायता करती है।

पुलिस और मेपल्स के बीच रीयल-टाइम डेटा साझाकरण

समझौता ज्ञापन (MoU) में यह अनिवार्य किया गया है कि गुजरात पुलिस मेपल्स (MapmyIndia) को प्रतिदिन वास्तविक समय की यातायात और सड़क संबंधी जानकारी उपलब्ध कराएगी। इस डेटा में निम्नलिखित महत्वपूर्ण अपडेट शामिल होंगे:

- सड़कें बंद होने की स्थिति।
- नियोजित सड़क निर्माण या मरम्मत गतिविधियों का विवरण।
- रैलियों और अन्य बड़े कार्यक्रमों से संबंधित जानकारी।

यह रीयल-टाइम फ़ीड मेपल्स ऐप में तुरंत दिखाई देगी, जिससे नागरिक वैकल्पिक मार्ग चुन सकेंगे और अपनी यात्रा को अधिक सुविधाजनक, कुशल और सुरक्षित बना सकेंगे।

सुचारू संचालन और पुलिसकर्मियों का प्रशिक्षण

इस प्रणाली के सुचारू और प्रभावी संचालन को सुनिश्चित करने के लिए, सभी जिलों के पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया है। उन्हें एक समर्पित व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से मैपमाइइंडिया को आवश्यक डेटा इनपुट प्रदान करने की विधि सिखाई गई है, और यह डेटा अपडेट करने की प्रक्रिया पहले से ही शुरू हो चुकी है।

गुजरात पुलिस ने राज्य के नागरिकों से अपील की है कि वे अनुकूलित यातायात अपडेट का लाभ उठाने और बेहतर समग्र यातायात प्रबंधन में योगदान देने के लिए मेपल्स ऐप का अधिकतम उपयोग करें। यह पहल सार्वजनिक सुरक्षा और कुशल यातायात प्रबंधन के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देने में एक मॉडल साबित हो सकती है।

बम की सूचना से हड़कंप, भदोही में तीन घंटे रोकी गई काशी–दादर एक्सप्रेस

(जीएनएस)। गोरखपुर से मुंबई के लिए रोजाना सैकड़ों यात्रियों को लेकर चलने वाली 15018 अप काशी–दादर एक्सप्रेस में मंगलवार दोपहर अचानक उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब वाराणसी रेलवे कंट्रोल को ट्रेन में बम होने की सूचना मिली। दोपहर 1 बजकर 20 मिनट पर मिली इस चेतावनी के बाद पूरे रेल प्रशासन और जिला पुलिस में हड़कंप मच गया। चूँकि ट्रेन उस समय वाराणसी स्टेशन पार कर चुकी थी, इसलिए उसे अगले पड़ाव भदोही में रोकने का तत्काल निर्णय लिया गया। ठीक 1:38 बजे ट्रेन भदोही स्टेशन पर पहुंची और प्लेटफॉर्म पर ही रोक दी गई, जिसके बाद सुरक्षा एजेंसियों ने बिना समय गंवाए तलाशी अभियान शुरू कर दिया।

जैसे ही स्टेशन पर यह जानकारी फैली, पूरे परिसर में तनाव का माहौल पैदा हो गया। आरपीएफ, जीआरपी और भदोही पुलिस की टीमों ने तत्काल यात्रियों को नीचे उतारकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। स्टेशन को चारों ओर से घेर लिया गया और सामान्य आवाजाही को कुछ समय के लिए नियंत्रित किया गया। कुछ ही मिनटों में सीओ आरपीएफ आलोक तिवारी, जीआरपी वाराणसी प्रभारी कुंवर प्रभात

सिंह, जिले के वरिष्ठ अधिकारियों और रेलवे सुरक्षा बल के जवानों ने संयुक्त रूप से ट्रेन में संदिग्ध वस्तुओं की तलाश शुरू कर दी। हर बोगी को खाली कराया गया और शौचालय, सीटों के नीचे, लगेज रैक, पानी के टैंक और सभी तकनीकी हिस्सों की गहन जाँच की गई।

वाराणसी से बम निरोधक दस्ता और तीन डॉग स्क्वायड टीमें भी विशेष उपकरणों के साथ भदोही पहुँच गईं। प्रशिक्षित कुत्तों ने एक-एक डिब्बे की बार-बार तलाशी ली, जबकि तकनीकी विशेषज्ञों ने मेटल डिटेक्टर और विशेष स्कैनर से पूरे रैक की जांच की। किसी भी संभावित खतरे को टालने के लिए पूरी प्रक्रिया को बेहद कठोर सुरक्षा मानकों के तहत संचालित किया गया। स्टेशन पर मौजूद यात्रियों और स्थानीय लोगों को बार-बार शांत रहने की अपील की जाती रही।

करीब तीन घंटे तक चले तनावपूर्ण तलाशी अभियान के बाद यह साफ हुआ कि ट्रेन में किसी प्रकार का विस्फोटक या संदिग्ध वस्तु नहीं पाई गई। शाम 4 बजकर 15 मिनट पर अधिकारियों ने पूरी जांच समाप्त होने की घोषणा की और ट्रेन को आगे रवाना कर दिया। हालांकि यात्रियों में पूरे तीन घंटे बेचैनी और चिंता का माहौल बना रहा, मगर पुलिस और रेलवे कर्मचारियों की सतर्कता तथा शांति-व्यवस्था ने किसी भी तरह की अफरा-तफरी को बड़े रूप लेने से बचा लिया।

अधिकारियों ने बताया कि भले ही सूचना झूठी या मज़ाक में की गई लगती हो, लेकिन ऐसी किसी भी चेतावनी को हल्के में नहीं लिया जा सकता। इस तरह की घटनाएँ सुरक्षा तंत्र के लिए बड़ी चुनौती बन जाती हैं, इसलिए हर प्रोटोकॉल का पालन करना अनिवार्य होता है। फिलहाल सूचना देने वाले स्रोत की जांच की जा रही है और यह पता लगाया जा रहा है कि यह धमकी वास्तविक खतरे का संकेत थी या किसी शरारती तत्व की करतूत। घटना ने एक बार फिर यह साफ कर दिया है कि आधुनिक रेल यात्रा की सुरक्षा में किसी भी तरह की लापरवाही की गुंजाइश नहीं है और हर सूचना को गंभीरता से परखना आवश्यक है।

गुजरात में एम्बुलेंस हादसा: नवजात शिशु और डॉक्टर समेत चार लोगों की जिंदा जलकर मौत, परिवार और गांव में मची कोहराम

(जीएनएस)। नई दिल्ली। गुजरात के अरवल्ली जिले के मोडासा शहर के पास मंगलवार तड़के हुए एक भयानक हादसे ने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। मोडासा-धनसुरा रोड पर रात करीब एक बजे एक निजी एम्बुलेंस में अचानक आग लगने से एक नवजात शिशु, उसके पिता, एक डॉक्टर और एक नर्स समेत चार लोगों की मौत हो गई। इस घटना ने केवल पीड़ित परिवार को नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र को स्तब्ध कर दिया।

पुलिस निरीक्षक डीबी वाला ने बताया कि यह हादसा उस समय हुआ जब जन्म के एक दिन के बच्चे को मोडासा के एक निजी अस्पताल से अहमदाबाद के निजी अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया जा रहा था। बच्चे की हालत गंभीर थी और डॉक्टरों ने तुरंत बेहतर सुविधाओं वाले अस्पताल में भर्ती कराने की सलाह दी

थी। इसी दौरान, एम्बुलेंस में अचानक आग लग गई।

घटना में मृतकों में नवजात शिशु, उसके पिता जिग्नेश मोची (38), अहमदाबाद निवासी डॉक्टर शांतिलाल रेंतिया (30) और अरवल्ली निवासी नर्स भूरीबेन मनात (23) शामिल हैं। इस हादसे में जिग्नेश मोची के दो रिश्तेदार, निजी एम्बुलेंस चालक और तीन अन्य लोग झुलस गए, जिन्हें पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। झुलसे लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है और उनका इलाज जारी है। एसपी डीबी वाला ने बताया कि जिग्नेश मोची पड़ोसी महिसागर जिले के निवासी थे। उनके नवजात बच्चे का जन्म मोडासा के निजी अस्पताल में हुआ था, जहां उसका इलाज चल रहा था। बेहतर उपचार के लिए जब बच्चे को अहमदाबाद के अस्पताल ले जाया जा रहा था, तभी रास्ते में किसी अज्ञात कारण से एम्बुलेंस में आग लग गई। आग इतनी भयानक थी कि उसमें फंसे लोगों के बचने का कोई मौका नहीं रहा।

इस हादसे ने इलाके में भारी दुख और आक्रोश पैदा कर दिया है। स्थानीय लोगों ने कहा कि ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए एंबुलेंस की सुरक्षा और उपकरणों की नियमित जांच बेहद जरूरी है। साथ ही, स्वास्थ्य और आपातकालीन सेवाओं की निगरानी में भी सुधार की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में इस तरह के हादसों से बचा जा सके।

पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए फॉरेंसिक टीम को लगाया गया है। प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि आग तकनीकी खराबी के कारण लगी या किसी अन्य वजह से। हादसे में मारे गए लोगों के परिवारों को सरकार और स्थानीय प्रशासन की ओर से मदद प्रदान करने की बात कही गई है।

यह घटना न केवल एक परिवार के लिए अपूरणीय क्षति लेकर आई है, बल्कि पूरे इलाके में स्वास्थ्य और आपातकालीन सेवाओं की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े करती है। मोडासा के लोग अभी भी इस हादसे के सदमे में हैं और मृतकों के परिजन राहत और न्याय की मांग कर रहे हैं।

गुजरात की दरगाह से कुल्हाड़ी–तलवार का विशाल जखीरा बरामद : बड़े सुरक्षा अभियान का पर्दाफाश

(जीएनएस)। गिर सोमनाथ, गुजरात। गुजरात के गिर सोमनाथ जिले में शांति और कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए चलाए गए एक व्यापक मेगा कॉम्बिंग ऑपरेशन के दौरान जिला पुलिस को एक अभूतपूर्व और गंभीर सफलता हाथ लगी है। इस कार्रवाई ने धार्मिक स्थलों की सुरक्षा को लेकर एक बड़ी चिंता खड़ी कर दी है।

प्रभास पाटन दरगाह से हथियारों का गुप्त भंडारण मिला

यह बड़ी कार्रवाई जिले के प्रभास पाटन क्षेत्र में स्थित हज़रत कच्छी पीर बाबा की दरगाह पर केंद्रित थी। विशेष रूप से, दरगाह की गहन तलाशी के दौरान, स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (SOG) की टीम ने एक गुप्त हिस्से या छिपे हुए स्थान का पता लगाया। इस गुप्त भंडारण स्थल से पुलिस ने कुल्हाड़ी, तलवारें और कई अन्य प्रकार के देसी हथियारों का एक विशाल जखीरा बरामद किया।

धार्मिक आस्था के केंद्र से इस तरह बड़ी मात्रा में आक्रामक हथियारों का मिलना प्रशासन और खुफिया एजेंसियों के लिए एक गंभीर सुरक्षा चिंता का विषय बन गया है, जो किसी भी संभावित

अप्रिय घटना की योजना या तैयारियों की ओर इशारा कर सकता है।

मुंजावर हिरासत में, गहन पूछताछ जारी

पुलिस ने बरामद किए गए सभी हथियारों को तत्काल ज़ब्त कर लिया है, और इस मामले में आगे की कानूनी कार्यवाही शुरू कर दी गई है। इस गुप्त हथियार भंडारण के संबंध में जानकारी जुटाने के लिए, दरगाह के मुंजावर (देखभालकर्ता) को हिरासत में लिया गया है और उनसे गहन पूछताछ की जा रही है कि ये हथियार यहाँ कैसे पहुँचे और इनका उद्देश्य क्या था।

11 विशेष टीमों ने चलाया वृहद अभियान

यह सफल ऑपरेशन जिला पुलिस अधीक्षक (SP) जयराजसिंह जाडेजा के सीधे निर्देशों और मार्गदर्शन में चलाया गया था। इस वृहद कॉम्बिंग अभियान में पुलिस के विभिन्न विशिष्ट विंग्स को शामिल किया गया था, जिनमें स्थानीय अपराध शाखा (LCB), एसओजी (SOG), बम निरोधक और निपटान दस्ता (BDDS), और जिले के विभिन्न पुलिस थानों की कुल 11 विशेष टीमें शामिल थीं।

यह कार्रवाई विशेष रूप से तटीय क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति को मजबूत करने के उद्देश्य से की गई थी। इस व्यापक कॉम्बिंग कार्रवाई की निगरानी स्वयं वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों द्वारा की गई, ताकि ऑपरेशन के हर चरण में दक्षता और सटीकता सुनिश्चित की जा सके। पुलिस अब इस बात की तह तक जाने की कोशिश कर रही है कि धार्मिक स्थल के भीतर इतने बड़े पैमाने पर हथियारों का जमावड़ा क्यों किया गया था और इसके पीछे कौन-कौन लोग शामिल हैं।

नई ऊंचाइयों को छूती टेक कंपनी वर्कमेट्स कोर2क्लाउड पहले ही दिन निवेशकों की पूंजी लगभग दोगुनी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय शेयर बाजार में सोमवार का दिन टेक्नोलॉजी सेक्टर के लिए इतिहास लिखने जैसा साबित हुआ, जब क्लाउड-आधारित समाधान प्रदान करने वाली उभरती कंपनी वर्कमेट्स कोर2क्लाउड ने बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर धमाकेदार प्रवेश किया। 204 रुपये के निर्गम मूल्य पर जारी किए गए इसके शेयरों ने सुबह बाजार खुलते ही निवेशकों को आश्चर्यचकित कर दिया। भारी मांग और मजबूती के बीच यह स्टॉक 90 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 387.60 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ और शुरुआती कारोबार में बढ़त बनाए रखते हुए कुछ ही समय में छूकर 405 रुपये तक पहुंच गया। निवेशकों को पहले दिन ही लगभग 98.53 प्रतिशत तक का लाभ मिला, जिससे यह आईपीओ हाल के महीनों में सबसे सफल लिस्टिंग्स में शामिल हो गया। कंपनी के 69.84 करोड़ रुपये के आईपीओ को निवेशकों से असाधारण

उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली। इश्यू को कुल 141.38 गुना सब्सक्रिप्शन मिला और हर श्रेणी में जबरदस्त मांग देखने को मिली। योग्य संस्थागत निवेशकों ने इसे 147.03 गुना, गैर-संस्थागत निवेशकों ने 202.96 गुना और खुदरा निवेशकों ने 111.64 गुना तक सब्सक्राइब किया। कुल 34,23,600 शेयरों वाले इस इश्यू में 27,37,200 नए शेयर और 5,14,800 शेयर ऑफर फॉर सेल के माध्यम से बाजार में रखे गए। कंपनी का कहना है कि नए इश्यू से जुटाई गई पूंजी का उपयोग कर्ज कम करने, कार्यशील पूंजी की जरूरतों और विभिन्न कॉरपोरेट गतिविधियों में किया जाएगा, ताकि भविष्य की वृद्धि के लिए मजबूत वित्तीय आधार तैयार किया जा सके।

सेबी को प्रस्तुत दस्तावेजों में कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन के आंकड़े भी उल्लेखनीय रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में कंपनी की लाभप्रदता लगभग सात गुना बढ़ी है। वर्ष 2022–23 में 1.86 करोड़ का लाभ कमाने वाली कंपनी ने 2023–24 में 5.35 करोड़ और 2024–25 में 13.93 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज कराया। मौजूदा वित्त वर्ष के पहले पांच महीनों यानी अप्रैल से अगस्त 2025 के बीच ही कंपनी 7.22 करोड़ रुपये का लाभ कमा चुकी है, जो पिछले वर्षों की तुलना में तीव्र प्रगति का संकेत देता है। इसी तरह कंपनी का राजस्व भी लगातार बढ़ता रहा है। 2022–23 में 29.14 करोड़ रुपये से शुरू हुई यह वृद्धि 2024–25 में 108.39 करोड़ तक पहुंच गई। चालू वित्त वर्ष के शुरुआती महीनों में ही कंपनी 59.55 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित कर चुकी है। ईबीआईटीडीए में भी कंपनी ने बड़े स्तर पर छलांग लगाई है, जो 2022–23 के 2.70 करोड़ से बढ़कर 2024–25 में 19.05 करोड़ रुपये तक पहुंच गया और वर्तमान वित्त वर्ष में अब तक 10.62 करोड़ रुपये पर बना हुआ है। तेजी से बढ़ती मांग, तकनीकी नवाचार और निवेशकों के भरोसे ने वर्कमेट्स कोर2क्लाउड को उन दुर्लभ कंपनियों की श्रेणी में ला खड़ा किया है जो बाजार में प्रवेश के पहले ही दिन अपने निवेशकों को लगभग दोगुना रिटर्न दे देती हैं। बाज़ार विशेषज्ञों का मानना है कि कंपनी की आक्रामक वृद्धि दर और वित्तीय मजबूती इसे आने वाले वर्षों में एसएमई प्लेटफॉर्म पर सबसे चर्चित टेक कंपनियों में बदल सकती है।

महामाया लाइफ साइंसेज की बाजार में दमदार शुरुआत, लिस्टिंग के बाद शेयर चढ़कर पहुंचा अपर सर्किट पर

(जीएनएस)। नई दिल्ली की सुबह शेयर बाजार के लिए सामान्य रही, लेकिन एग्रीकल्चर सेक्टर में काम करने वाली महामाया लाइफ साइंसेज लिमिटेड ने निवेशकों के बीच उत्साह की एक ताज़ी लहर पैदा कर दी। सोमवार को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर कंपनी का शेयर 114 रुपये के इश्यू प्राइस के मुकाबले 1.75% प्रीमियम के साथ 116 रुपये पर लिस्ट हुआ। लिस्टिंग भले ही अत्यधिक तेज़ न रही हो, लेकिन बाजार खुलने के कुछ ही समय बाद खरीदारी का रुझान तेज़ होने लगा और करीब 11:30 बजे शेयर छलांग लगाकर 121.80 रुपये के अपर सर्किट स्तर पर पहुंच गया। इस तरह निवेशकों को पहले ही दिन लगभग 6.84% का लाभ मिल गया, जिसने बाजार में कंपनी के प्रति भरोसे को और मजबूत किया।

महामाया लाइफ साइंसेज के 70.44 करोड़ रुपये के आईपीओ ने 11 से 13 नवंबर के बीच निवेशकों को आकर्षित किया। हालांकि इसे बेहद ज़बरदस्त प्रतिक्रिया नहीं मिली, लेकिन इश्यू औसत स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करते हुए कुल 1.63 गुना सब्सक्राइब हुआ। क्यूआईबी श्रेणी में सब्सक्रिप्शन 1.19 गुना, एनआईआई श्रेणी में 3.63 गुना और रिटेल निवेशकों की श्रेणी में 1.02 गुना रहा, जो दर्शाता है कि निवेशकों ने कंपनी की संभावनाओं को लेकर संतुलित लेकिन सकारात्मक रुख अपनाया।

आईपीओ में कुल 61,78,800 शेयर शामिल थे, जिनमें से 53,29,200 नए शेयर जारी किए गए जबकि 5.40 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल के तहत बेचे गए। कंपनी नए शेयरों से जुटाई गई राशि को अपने विस्तार कार्यों में लगाएगी। इसमें नए मैन्युफैक्चरिंग प्लांट की स्थापना, उपकरणों की खरीद, नए वेयरहाउस का निर्माण और अन्य कॉरपोरेट आवश्यकताएं शामिल हैं। तेजी से बढ़ते एग्रीकल्चर सेक्टर में अपनी स्थिति मज़बूत करने के लिए कंपनी ने पहले ही रणनीतिक रोडमैप तैयार कर लिया है।

वित्तीय दृष्टि से कंपनी का प्रदर्शन पिछले तीन वर्षों में लगातार बेहतर होता दिखा है। ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस में दर्ज आंकड़ों के अनुसार, कंपनी का शुद्ध लाभ 2022–23 में 3.75 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023–24 में 5.22 करोड़ और 2024–25 में 12.94 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही में ही कंपनी 4.10 करोड़ रुपये कमा चुकी है, जो उसके तेज़ी से बढ़ते व्यापार का संकेत है। राजस्व के मोर्चे पर भी कंपनी ने उल्लेखनीय प्रगति की है। 2022–23 में जहां राजस्व 137.40 करोड़ रुपये था, वहीं 2023–24 में यह बढ़कर 162.83 करोड़ हो गया। 2024–25 में कंपनी ने 267.17 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया, और सिर्फ पहली तिमाही में ही 84.04 करोड़ रुपये की कमाई कर ली। यह वृद्धि न केवल बाजार विस्तार का परिणाम है, बल्कि कंपनी के मजबूत वितरण नेटवर्क और लगातार बढ़ती मांग का भी असर है।

हालांकि इस तेज़ विकास यात्रा के साथ-साथ कंपनी का कर्ज भी बढ़ा है। 2022–23 में जहां कुल कर्ज 24.37 करोड़ रुपये था, वहीं 2024–25 में यह 58.11 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। तेजी से विस्तार करते व्यवसाय में कर्ज का बढ़ना स्वाभाविक समझा जा रहा है, लेकिन कंपनी की बढ़ती आय और लाभ इसे संभालने में सहायक साबित हो सकती है।

रिजर्व और सरप्लस की बात करें तो यह 18.19 करोड़ रुपये से बढ़कर 2025 की पहली तिमाही में 35.73 करोड़ रुपये हो चुका है। ईबीआईटीडीए भी 2022–23 के 8.91 करोड़ रुपये से तीन गुना बढ़कर 2024–25 में 24.64 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनी ने 8.04 करोड़ रुपये का ईबीआईटीडीए हासिल किया, जो उसकी संचालन क्षमता और लाभप्रदता के लगातार मजबूत होने का संकेत है।

कुल मिलाकर, महामाया लाइफ साइंसेज की बाजार में एंट्री उम्मीद से बेहतर साबित हुई है। हल्की प्रीमियम लिस्टिंग के बाद अपर सर्किट तक पहुंचने की तेजी ने यह साफ कर दिया है कि निवेशक कंपनी के दीर्घकालिक विकास पर भरोसा जता रहे हैं। वित्तीय प्रदर्शन में निरंतर सुधार और विस्तार योजनाओं की स्पष्टता को देखते हुए बाजार विशेषज्ञ भी कंपनी पर निगाह बनाए हुए हैं।